ओ३म्

आर्य वन्दना

ओ३म्

मूल्य ९ रूपये

हिमाचल प्रदेश आर्य प्रतिनिधि सभा का मुख पत्र

महर्षि दयानन्द अमृत वचन

दीन–दुःखियों, अपाहिजों और अनाथों को देखकर श्रीमद्दयानन्दजी क्राइस्ट बन जाते हैं। धुरन्धर के सम्मुख श्री शंकराचार्य का रूप दिखा देते हैं। एक ईश्वर का प्रचार करते और विस्तृत भ्रातृभाव की शिक्षा देते हुए भगवान् दयानन्द श्रीमान् मुहम्मदजी प्रतीत होने लगते हैं। ईश्वर का यशोगान करते हुए स्तुति–प्रार्थना में जब प्रभु दयानन्द इतने निमग्न हो जाते हैं कि उनकी आंखों से परमात्म–प्रेम की अविरल अश्रुधारा निकल आती है, गद्गद् कण्ठ और पुलकित–गात हो जाते हैं, तो सन्तवर रामदास, कबीर, नानक, दादू, चेतन और तुकाराम का समय बन्ध जाता है। वे सन्त–शिरोमणि जान पड़ते हैं। आर्यत्व की रक्षा के समय वे प्रातः स्मरणीय प्रताप, श्री शिवाजी तथा गुरु गोविन्दसिंह जी का रूप धारण कर लेते हैं।

महाराज के जीवन को जिस पक्ष से देखें, वह सर्वांग सुन्दर प्रतीत होता है। त्याग और वैराग्य की उसमें न्यूनता नहीं है। श्रद्धा और भक्ति उसमें अपार पाई जाती है। उसमें ज्ञान अगाध है। तर्क अथाह है। वह समयोचित मति का मन्दिर है। प्रेम और उपकार का पुंज है। कृपा और सहानुभूति उसमें कूट–कूटकर भरी पड़ी है। वह ओज है, तेज है, परम प्रताप है, लोक–हित है और सकल कला सम्पूर्ण है।

–स्वामी सत्यानन्द

हमारे पूर्वज

लखते न अघ की ओर थे वे, अघ न लखता था उन्हें,
वे धर्म को रखते सदा थे, धर्म रखता था उन्हें,
वे कर्म से ही कर्म का थे नाश करना जानते,
करते वहीं थे वे जिसे कर्तव्य थे वे मानते।

–मैथिलीशरण गुप्त

यह अंक आर्य समाज कुल्लू के सौजन्य से प्रकाशित किया गया तथा आगामी अंक डी. ए. वी. सुन्दरनगर के सौजन्य से प्रकाशित किया जाएगा।

अंक : ६५वां विक्रमी सम्वत् २०७२ सृष्टि सम्वत् १६६०८५३११६ जुलाई २०१५

आर्यों का महान् 'आर्य समाज'

♦सोनालाल नेमधारी, मोरिशस

'आर्य समाज' नाम सुनते ही एक झंकार का अनुभव होने लगता है कि संसार को दिया समाज, 'आर्य समाज' के आगे किसी और नाम के समाज की आवश्यकता नहीं। अनेक समाजों को क्यों जन्म दें। जो काम मानव मात्र के कल्याण के लिए आवश्यक था वह तो पूरा हो ही रहा है। महान् सूर्य की उपस्थिति में टिमटिमाते दीयों को क्या आवश्यकता ? महर्षि जी ने कहा था कि वे कोई नये समाज की स्थापना नहीं कर रहे हैं। वही पुराने वैदिक समाज आर्य समाज का उद्धार कर रहे हैं। धूल धूसरित की धूल को झाड़–फूंक कर उसमें जान डाल दी। उसकी चमक बराबर झलकने लगी। आर्य जगत् में उसी एक समाज से उजाला फैल रहा है। कर्म योगी, संन्यासी, समाज सेवक काफी संख्या में लगे हैं। प्रचार–प्रसार कर रहे हैं। यात्रा कर रहे हैं। पत्र–पत्रिकाएं निकाल रहे हैं। टी वी, रेड़ियो आदि साधनों से लाभ उठा रहे हैं। किस कोने में उसका प्रवेश नहीं हमारा टापू छोटा है। दूर–दूर गांवों, पहाड़ की तराइयों में सागर तट के मछुआरों की बस्ती में, शहर के कोने–कोने में आर्य समाज फैला है। महर्षि दयानन्द को लोग जानते हैं। यज्ञ हवन सन्ध्या वन्दना से परिचित हैं। प्रारम्भ से ही बैठकों में पढ़ाई चलती आ रही है। गैर आर्य समाज के बच्चे भी विद्या प्राप्त करते हैं। जुटाव होता है। बैठक के सत्संग में वेद–बच्चे सभी आते हैं। बच्चों को भेजते हैं। कोई भेद भाव नहीं है। कट्टर पौराणिक भी अपने घर यज्ञ करवाता है। वैदिक विवाह करवाता है। आचार्य पण्डित गण आर्य पद्धति के आधार पर भाषण उपदेश जनता तक पहुँचाते हैं। कोई अछूता नहीं है। तो फिर अन्य नामों से समाज बनाना कहाँ तक सार्थक लगता है ? ऐसी झलक झलकती है कि अनेकों नामों से समाज बनाकर अपना असर किसी को दिखाना चाहते हैं। स्वयं के लाभ के लिए ऐसा कर रहे हैं। भोले लोगों को फुसलाकर 'फेडेरेशिन आफ आर्य समाज, 'गहलोत राजपूत समाज', 'आर्य राववेद प्रचारिणी सभा' जैसे समाज बनाकर अपना स्वार्थ सिद्ध कर रहे हैं। लाभ का अंश ऊपर ही लूट लिया जाता है। नीचे कुछ पहुंचता ही नहीं है। हाँ जहाँ भी पहुँचते हैं 'आर्य समाज' नाम का महर्षि दयानन्द सरस्वती' नाम का 'सत्यार्थ प्रकाश' का नाम चारों वेदों की हुंकार अवश्य भरते हैं। जब मंजिल तक पहुँचने के लिए भी नाम लेते है तो अन्य नामों से क्या फायदा ? पूरा लाभ आर्य समाज नाम से ही मिलता हैं ? तो फिर ऋषि का नाम बदनाम करने में क्यों लगे हैं। राह चलते प्यास बुझ जाती है तो कुआँ क्यों खोदने में लगे हैं ?सजा–सजाया, बना बनाया आर्य समाज सामने है तो व्यर्थ रेगिस्तान में दौड़ क्यों लगा रहे हैं ? जितने समाज बनेगें उतने बंटवारे होंगे, हमारी शक्ति बंट जायेगी। आर्य समाज ही कमजोर होगा, महर्षि दयानन्द का नाम ही बदनाम होगा। इससे बचकर चलना ही बेहतर है। एक दिशा की और बढ़ना ही लाभदायक है। आर्य समाज की हुँकार ही लाभदायक होगी।

मुख्य संरक्षक	: स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती जी महाराज, दयानन्द मठ, चम्बा मोबाइल : 94180–12871
संरक्षक	: रोशन लाल बहल, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र., मोबाइल : 94180–71247
मुख्य परामर्शदाता	: सत्य प्रकाश मेहंदीरत्ता, संरक्षक एवं विशेष सलाहकार, आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. फोन : 090348–17118, 094669–55433, 01733–220260
परामर्शदाता	: 1. रत्न लाल वैद्य, आर्य समाज मण्डी, हि. प्र. मोबाइल : 94184–60332 2. सत्यपाल भटनागर, प्राचार्य, आर्य आदर्श विद्यालय, कुल्लू मोबाइल : 94591–05378
विधि सलाहकार	: प्रबोध चन्द सूद (एडवोकेट), प्रधान आर्य प्रतिनिधि सभा, हि. प्र. मोबाइल : 94180–20633
सम्पादक	: कृष्ण चन्द आर्य, महर्षि दयानन्द मार्ग, आर्य समाज, सुन्दरनगर (खरीहड़ी), जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94182–79900
मुख्य प्रबन्ध–सम्पादक	: विनोद स्वरूप, कांगड़ा कालौनी, डा. कनैड, तह. सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि. प्र.) पिन 175019 मोबाइल : 94181–54988
प्रबन्ध–सम्पादक	: माया राम, गांव चुरढ़, सुन्दरनगर मोबाइल : 94184–71530
सह–सम्पादक	: 1. राजेन्द्र सूद, 106, ठाकुर भ्राता, लोअर बाजार, शिमला 2. मनसा राम चौहान, आर्य समाज, अखाड़ा बाजार, कुल्लू मोबाइल : 94599–92215
मुद्रक	: प्राईम प्रिंटिंग प्रैस, शहीद नरेश कुमार चौक, सुन्दर नगर, (हि. प्र.) 175019
नोट	: लेखकीय विचारों से सम्पादकीय व प्रकाशकीय सहमति आवश्यक नहीं है।

सम्पादक, मुद्रक एवं प्रकाशक कृष्ण चन्द आर्य ने हिमाचल आर्य प्रतिनिधि सभा के लिए छपवाकर आर्य समाज, महर्षि दयानन्द मार्ग, खरीहड़ी (सुन्दरनगर) से प्रकाशित किया।

सम्पादकीय

अगस्त १९९६ को सेवानिवृति के उपरान्त मैं आगामी वर्ष १९९७ को हिमाचल पैंशनर कल्याण संघ खण्ड सुन्दरनगर की चुनाव सम्बन्धी बैठक में भाग लेने हेतु अपने मित्र परम आदरणीय श्री भगत राम आजाद के साथ जवाहर पार्क सुन्दरनगर गया। श्री आजाद ने चलती बार मुझ से कहा था कि मैं प्रधान पद के लिए श्री श्रवण कुमार जी का नाम प्रस्तुत करूंगा, जिसका आप ने अनुमोदन करना। मुझे प्रसन्नता हुई कि बुजुर्गों की कमेटी का नवगठन किया जा रहा है जिस हेतु जवाहर पार्क में गया, जहाँ मेरे गुरू परम आदरणीय श्री राम जी दास गुप्ता, श्री लाभ सिंह सेन, श्री दमोदर सिंह सेन, हमेन्द्र सिंह सेन आदि विभूतियाँ वहाँ बैठी थी। नव कमेटी का गठन करने हेतु चुनाव प्रक्रिया शुरू हुई। जिसमें कुछ सदस्यों ने प्रधान पद के लिए मेरा नाम प्रपोज़ किया और सभी सदस्यों ने एक मत होकर मेरे नाम का समर्थन किया। मैंने अपने नाम के स्थान पर पूर्व प्रधान श्री श्रवण कुमार का नाम प्रस्तुत करना चाहा था कि सभी सदस्यों ने मेरे गुरूजन से मुझे बैठ जाने को कहा और यह भी कहा कि यह हम सबकी इच्छा है कि कृष्ण चन्द आर्य ही प्रधान पद के लिए उपयुक्त उम्मीदवार हैं। मैंने अनिच्छा से उनके प्रस्ताव को सिर झुकाकर स्वीकार किया। इसके उपरान्त मुझे श्री बी.डी. शर्मा द्वारा जिला मण्डी की कार्यकारिणी का गठन करने हेतु मनोनीत किया गया। मैंने मण्डी जिला के लगभग सभी खण्डों का भ्रमण किया और प्रदेश के सेवानिवृत बुजुर्ग पैंशनरों की ओर से पूर्ण सहयोग प्राप्त करता रहा और प्रतिवर्ष मुझे सर्वसम्मति से जिला प्रधान चुना जाता रहा। लगभग चार साल पूर्व मेरा स्कूटर दुर्घटना ग्रस्त हो गया, हैलमेट भी चूर–चूर हो गया लेकिन उसकी वजह से मैं जीवित रहा और बुजुर्ग पैंशनरों का पूर्ण सहयोग मिलता रहा और अब १८ वर्ष के उपरान्त अपनी वृद्धावस्था तथा बढ़ती आयु के कारण पैंशनर संघ से विदाई ले रहा हूँ। संघ की ओर से जो भी आदेश होगा उसे मैं विधिवत पालन करता रहूँगा। हमारे बुजुर्ग पैंशनरों की देखभाल करने हेतु बहुत कुछ करना शेष है जो नवगठित कमेटी का कर्तव्य है उसे क्रियान्वित करवायें। मैं समझता हूँ कि बुजुर्ग सेवा ही सबसे बड़ी मानव सेवा है। यदि हम विपत्ति में पड़े हुए बुजुर्गों के आसुंओं को पोंछते हैं वही सबसे बड़ा कर्म और जीवन का मर्म है। आज मानव बारूद के ढ़ेर पर बैठा है, कभी भी और कुछ भी हो सकता है। हमें हर समय मानव सेवा के लिए तत्पर रहना चाहिए। ये बात श्री मैथिलीशरण गुप्त जी ने पूर्वजों की महिमा का वर्णन करते हुए कहा है :–

"सबकी नसों में पूर्वजों का पुण्य रक्त प्रवाह हो,
गुण, शील, साहस, बल तथा सब में भरा उत्साह हो।
सबके हृदय में सर्वदा समवेदना का दाह हो,
हमको तुम्हारी चाह हो, तुमको हमारी चाह हो।"

हम ने जीवन में अनेकों सुख–दुःख, धूप–छाया और बसन्त पतझड़ देखे हैं। हमें स्वस्थ और सूचारू रूप से समाज की सेवा करते रहना चाहिए और इस देश की उन्नति के लिए चार चाँद लगाते रहना चाहिए। मैं जिला मण्डी के सभी खण्ड़ों के पैंशनरों का आभारी और धन्यवादी हूँ कि उनके सहयोग से आगे बढ़ पाया हूँ और इस जीवन के सच्चे और सूच्चे मोती लेकर यमराज के सामने अपनी गठड़ी खोलूंगा। मैं चच्योट खण्ड के प्रधान श्री रणजीत सिंह, डा. अमरनाथ शर्मा और उनके सभी सहयोगी वर्ग का आभारी रहूँगा। उनके मार्ग दर्शन में मैं अपने कर्तव्य पथ पर आगे बढ़ता रहा। जोगिन्द्रनगर के प्रधान बेलीराम, द्रंग खण्ड प्रधान श्री एम.सी. चौहान तथा उनकी समस्त कार्यकारिणी का आभारी रहूँगा जो समय–समय पर मेरा पथप्रदर्शन करते रहे हैं। अन्य सभी खण्डों के पैंशनरों का भी मैं हृदय की गहराई से आभार और धन्यवाद व्यक्त करता हूँ। बहुत से पैंशनर बन्धुओं के सहयोग से प्रदेश में चल रही आर्य वन्दना का भी सहयोग देने हेतु अत्यन्त आभारी रहूँगा। अब मैं पैंशनर संघ से इसलिए त्याग–पत्र देने हेतु विवश हो गया हूँ क्योंकि बढ़ती आयु के कारण अब शरीर की हड्डियों ने कीर्तन करना शुरू कर दिया है। ताकि नये जोश के साथ पुनः इस भारत भूमि में आ सकूं।

मैंने अपनी सेवानिवृत्ति के १८ साल पूरा कर चुकने के उपरान्त बहुत ही सुखद अनुभुतियाँ प्राप्त की हैं। मैं सेवानिवृत बुंधओं का आभारी हूँ। जिनके मार्गदर्शन से मुझे कदम–कदम पर ऊर्जा व उत्साह प्राप्त हुआ है। इस १८ साल की अवधि में जिला मण्डी के लगभग सभी खण्डों का भ्रमण करने की जो स्मृतियाँ मेरे स्मृति पटल पर अंकित हुई हैं, उन्हें मैं कभी भी, किसी भी परिस्थिति में विस्मृति नहीं कर सकता। वह मेरे अन्तर्मन व अन्तरात्मा की अनमोल सम्पति है। अनेकों खण्डों में जाकर मुझे अनेकों बन्धुओं को श्रद्धांजलि पुष्प भी अर्पित करने पड़े, जो सदा व सर्वदा के लिए ईश्वरीय व्यवस्था मैं समा गए है। यह प्रकृति का अटल नियम है। आना–जाना परमात्मा का अनादिकाल से चला आ रहा खेल है। तभी तो देवस्य पश्यकान्यम् हमारे महर्षियों ने कही है। मेरा अपने बुजुर्ग बन्धुओं से केवल मात्र यही कहना है कि अपने मन व मस्तिष्क को ठण्डा व शान्त रखकर प्रातः व शाम उस महान शक्ति का अल्पकाल के लिए ही सही ध्यान अवश्य कर लिया करें। जो हमारी बड़ी से बड़ी पीड़ा का हरण कर लेता है हमें चिरन्तन सुख प्राप्त कराता है।

–कृष्ण चन्द आर्य

आर्य समाज कुल्लू के प्रमुख कार्यकर्ता व विशेष गतिविधियां

•श्री अशोक आनन्द, प्रधान आर्य समाज कुल्लू

आर्य समाज कुल्लू के विकास, प्रगति एवं उन्नति के लिए पहले स्व. श्री नानक चन्द, खजाना राम, ज्वालादास, स्वामी दयाल, पं. गोविन्द राम, लाला मेला राम, प्राणनाथ सूद, पन्ना लाल सूद, महाशय आत्मा राम, रामशरण दास, देवराज विग और श्रीमती हरदेई आदि के नाम उल्लेखनीय हैं जिन्होंने आर्य समाज के कार्यों को निष्ठापूर्वक किया। वर्तमान में सर्वश्री अशोक आनन्द (प्रधान), गिरजानन्द (मन्त्री), मित्रभूषण (संरक्षक), मनसा राम (कोषाध्यक्ष), विनोद विग, सत्यपाल भटनागर, चन्दू राम एवं समीर भटनागर आदि सक्रिय कार्यकर्त्ता हैं जो आर्य समाज की प्रगति हेतु समर्पण भाव से प्रयत्नशील हैं। इसके अतिरिक्त वर्तमान कार्यकारिणी के सभी सदस्य अत्यन्त निष्ठा से कार्य कर रहे हैं।

नियमित गतिविधियां : आर्य समाज कुल्लू का एक अत्यन्त सराहनीय पक्ष यह है कि यहाँ दैनिक यज्ञ होता है। इसके अतिरिक्त प्रति रविवार को साप्ताहिक हवन, यज्ञ व सत्संग होता है। प्रति शुक्रवार को विद्यालय के विद्यार्थियों व अध्यापक–अध्यापिकाओं के साथ यज्ञ किया जाता है। प्रति सोमवार को महिला सत्संग भी होता है। समय–समय पर पारिवारिक सत्संग भी किए जाते हैं। वार्षिकोत्सव प्रायः प्रतिवर्ष मई मास या जून मास में मनाया जाता है। शिवरात्रि पर ऋषिबोधोत्सव तथा दीपावली पर ऋषिनिर्वाणोत्सव बड़ी धूमधाम से मनाये जाते हैं। इन पर्वों के कार्यक्रम में विद्यालय के विद्यार्थियों की विशेष भूमिका होती है। समय–समय पर आर्य समाज कुल्लू लोगों को निरोग रखने के लिए योग शिविर का भी आयोजन करता रहता है। जो पिछले चार पांच वर्षों से नियमित वर्ष में एक बार लगाया जा रहा है। पिछले कुछ वर्षों से 'आर्य सिलाई केन्द्र' भी चल रहा है जिसमें प्रतिवर्ष लगभग १५ से २० लड़कियाँ सीखती हैं, उनमें से दो लड़कियों को सिलाई मशीन भी दी जाती हैं जिनका खर्च वर्तमान प्रधान श्री अशोक आनन्द जी करते हैं। आज तक इस केन्द्र से लगभग १०० कन्यायें सीख चुकी हैं। सिलाई का प्रशिक्षण ११.०० से २.०० बजे तक होता है। इसमें श्रीमती सुशीला चौधरी सिलाई का प्रशिक्षण देती हैं।

जन सुविधाएं : आर्य समाज कुल्लू में बाहर से आए आर्य विद्वानों, प्रचारकों, साधु–सन्यासियों, समाजों के सभासदों को निःशुल्क आवासीय सुविधा उपलब्ध करवाई जाती है इसके अतिरिक्त जनसाधारण तथा आगन्तुकों को नाम मात्र के शुल्क पर आवास सुविधा दी जाती है जिसमें बिस्तर आदि की सुचारू व्यवस्था है। यहां पर आर्य प्रतिनिधि सभा हि. प्र. के पूर्व प्रधान स्व. स्वामी सुबोधानन्द सरस्वती, स्व. कृष्ण लाल आर्य अन्तर्राष्ट्रीय आर्य विद्वान एवं सांसद के सदस्य स्वामी आर्यवेश जी और वर्तमान प्रधान स्वामी सुमेधानन्द सरस्वती अनेक बार यहां पधारे जिनकी सेवा शुश्रुषा करने का गौरव इस आर्य समाज को अनेक बार प्राप्त हुआ है।

आर्य समाज की विचारधारा को जन–जन तक पहुंचाने के लिए श्री सत्यपाल भटनागर, श्री अशोक आनन्द, श्री मनसा राम आदि हमेशा तत्पर रहते हैं। आर्य समाज मन्दिर कुल्लू द्वारा संचालित आर्य आदर्श उच्च विद्यालय की भी विशेष भूमिका है। प्रत्येक उत्सव में विद्यार्थी व अध्यापक–अध्यापिकाओं की विशेष भूमिका रहती है।

शिक्षण संस्थाएँ : आर्य समाज में स्थान का सदुपयोग करने की दृष्टि से तथा स्थानीय मांग को ध्यान में रखते हुए सर्वप्रथम सन् १९०८ ई. में आर्य समाज द्वारा एक माध्यमिक पाठशाला खोली गई थी जिसमें हिन्दी तथा अंग्रेजी अनिवार्य विषय थे। सन् १९१८ ई. में यहाँ सरकारी स्कूल खुल गया। तात्कालिक परिस्थितियों के कारण आर्य समाज द्वारा उस समय माध्यमिक विद्यालय को बन्द करने का निर्णय लिया गया तथा उस समय कन्याओं के लिए अलग से विद्यालय नहीं था अतः आर्य समाज द्वारा सुल्तानपुर में एक कन्या प्राथमिक पाठशाला खोली गई जिसके लिए स्वामी दयाल जी ने भूमि दान दी। इस पाठशाला में स्वामी दयाल जी की धर्मपत्नी श्रीमती हरदेई ने अध्यापन शुरू किया। उस समय किसी स्त्री के लिए नौकरी करना सामाजिक नियमों के विरूद्ध समझा जाता था परन्तु श्रीमती हरदेई ने इसकी परवाह न करते हुए आर्य समाज के संस्कारों के फलस्वरूप सफलतापूर्वक अध्यापन कार्य किया। बाद में उन्होंने प्रशिक्षण प्राप्त किया और सरकारी नौकरी कर ली। श्रीमती हरदेई को जिला काँगड़ा में सरकारी स्कूल की पहली अध्यापिका बनने का गौरव प्राप्त है।

आर्य समाज कुल्लू द्वारा १९४८ ई. तक लड़कियाँ के लिए सिलाई केन्द्र स्कूल चलाया जाता रहा जो बाद में बन्द हो गया। सन् १९८१ ई. में आर्य समाज द्वारा एक बालबाड़ी पाठशाला प्रारम्भ की गई १९८७ ई. में इसे प्राथमिक पाठशाला का दर्जा दिया गया। सन् १९९१–९२

ई. से इसे माध्यमिक स्तर कर दिया गया। अब इस विद्यालय में नर्सरी से दसवीं तक यह विद्यालय आर्य आदर्श विद्यालय के नाम से आर्य समाज अखाड़ा बाज़ार में सफलतापूर्वक चल रहा है।

महिला आर्य समाज : जब से कुल्लू नगर में आर्य समाज पूर्णतया अस्तित्व में आया तभी से यहाँ आर्य समाज की भी गतिविधियाँ होती रही। यद्यपि स्वतन्त्र रूप से अलग से इसका गठन नहीं हुआ। तथापि महिलाओं ने सत्संगों और हवन यज्ञ आदि के द्वारा प्रचार कार्य में सदा भूमिका निभाई है। आजकल "आर्य आदर्श विद्यालय" की अध्यापिकाएँ तथा इनके साथ अन्य स्थानीय महिलाएँ प्रति शुक्रवार को विद्यालय में हवन यज्ञ कराती हैं।

वेद प्रचार कार्य : कुल्लू यद्यपि प्राचीनकाल से ही पौराणिकों का गढ़ रहा हैं। यहाँ की संस्कृति में देवी देवताओं के पूजन की प्रथा अत्यन्त प्रगाढ़ एवं प्राचीन है तथापि यहाँ के आर्य समाजी प्रारम्भ से ही निष्ठावान रहे हैं और प्रचार कार्य में बढ़ चढ़कर योगदान देते रहे हैं। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश द्वारा समय–समय पर उपदेशक भी भेजे जाते हैं जो वेद प्रचार करते हैं।

वार्षिकोत्सव प्रायः नियमित रूप से होते रहते हैं जिनमें बाहर से आर्य विद्वानों को आमन्त्रित किया जाता है। शोभा यात्रा, प्रभात फेरी, प्रवचन एवं भजनोपदेश के माध्यम से वेद प्रचार का कार्य नियमित होता रहता है। शुद्धि आन्दोलन : स्वतन्त्रता से पूर्व तथा पश्चात् भी कुल्लू में धर्म परिवर्तन का दौर चलता रहा। अनेक ईसाई, मुस्लिम सम्प्रदाय के लोग यहाँ आते रहे और भोले–भाले गरीब लोगों को प्रलोभन देकर, उन्हें बहकाकर उनका धर्म परिवर्तन करते थे। कुल्लू के आर्यों ने इस दिशा में महत्वपूर्ण भूमिका निभाई और अनेकों धर्म परिवर्तन के शिकार हुए लोगों को पुनः हिन्दू बनाया और उन्हें आर्य समाज के संस्कार दिये।

विशिष्ट अतिथि शोभा आगमन : आर्य समाज कुल्लू में समय–समय पर उनके अति विशिष्ट अतिथियों का आगमन होता रहा है। इसे अनेक राष्ट्रीय स्तर के सभा नेताओं के आतिथ्य का गौरव प्राप्त है। सन् १९४० ई. में आर्य जगत के प्रख्यात विद्वान महाशय खुशहाल चन्द, मासिक मिलाप समाचार पत्र, पंजाब जो बाद में महात्मा आनन्द स्वामी के नाम से विख्यात हुए यहाँ पधारे। उन्हें यह स्थान अत्यन्त प्रिय था। सन् १९६७ ई. में राष्ट्रीय स्तर के नेता एवं हिन्दू सुरक्षा समिति के प्रधान श्रीयुत् रामेश्वरानन्द जी पधारे तथा उन्होंने प्रचार कार्य किया।

आर्य समाज मन्दिर कुल्लू : एक परिचय

•पुरोहित, आर्य समाज कुल्लू

हिमाचल प्रदेश का प्रत्येक स्थान प्रायः प्राकृतिक सौन्दर्य की छटा से सुशोभित है परन्तु इसमें कुल्लू घाटी अत्यन्त रमणीय है। कुल्लू हिमाचल प्रदेश का एक ऐसा जिला है जो लाहौल–स्पीति, किन्नौर, काँगड़ा, मण्डी और शिमला जैसे प्रमुख मण्डलों से घिरा हुआ है। इसमें चारों ओर सुन्दर पर्वतों की घाटियां साथ में व्यास नदी की कलकल ध्वनि, कई बर्फानी झीलें, घने जंगल आदि अनेकों प्राकृतिक दर्शनीय दृश्य हैं जिससे कुल्लू का महत्व और भी बढ़ जाता है। (कुल्लू का सम्पूर्ण एवं विस्तृत इतिहास जानने के लिए आर्य समाज कुल्लू के श्री सत्यपाल भटनागर द्वारा लिखित एवं अनुपम प्रकाशन, १०० अखाड़ा बाज़ार कुल्लू (हि. प्र.) द्वारा सन् १९९६ में प्रकाशित 'कुल्लू का इतिहास एवं संस्कृति' नामक पुस्तक पठनीय है)।

आर्य समाज की स्थापना : सन् १८९० में सुल्तानपुर नामक स्थान में आर्य समाज मन्दिर की स्थापना हुई। २० वीं सदी में अखाड़ा बाज़ार में आर्य समाज का नया भवन निर्मित किया गया। जिसके लिये श्री खजाना राम सूद से भूमि खरीदी और स्थानीय लोगों से दान एकत्रित किया गया। सुल्तानपुर में पूर्व निर्मित भवन इस समय किराये पर दिया गया है और स्थानीय आर्य समाज के पदाधिकारियों द्वारा उसके प्राचीन रूप और ढाँचे को यथावत् सुरक्षित रखा गया है। इस प्राचीन भवन की देख–रेख तथा मुरम्मत भी समय–समय पर होती रहती है। अखाड़ा बाज़ार में एक बड़ा हाल है जिसमें सत्संग व विशेष समारोह होते हैं तथा इसके अतिरिक्त १४ कमरे बनाए गए हैं। स्थानीय दानवीर श्री रोशन लाल सूद ने १९८२ में १२,००० रू. का दान दिया। जिससे शौचालयों व स्नानागारों का निर्माण किया गया। सन् १९९० में चार कमरों के स्थान पर तीन दुकानें भी बनाई गई तथा खाली पड़ी जगह पर एक भव्य यज्ञशाला भी बनाई गई। आर्य प्रतिनिधि सभा हिमाचल प्रदेश का कार्यालय भी आर्य समाज कुल्लू है। समय–समय पर आर्य प्रतिनिधि सभा का सहयोग भी मिलता रहता है यहाँ नशाबन्दी जैसे अनेकों समारोह का आयोजन किया जा चुका है जिसमें सभा प्रधान स्वामी सुमेधानन्द, स्वामी आर्यवेश जैसे अनेकों विद्वानों के ओजस्वी भाषण हुए जिसमें सैंकड़ों लोगों ने भाग लिया। अनेक विशेष समारोहों तथा वार्षिकोत्सवों में भी सभा का सहयोग प्राप्त रहता है।

स्वतन्त्रता आन्दोलन में आर्य समाज कुल्लू की भूमिका

♦'हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम का इतिहास' से साभार

जब भारतवर्ष ब्रिटिश साम्राज्य के पराधीन था उस समय महात्मा गांधी के नेतृत्व में व्यापक स्तर पर स्वतन्त्रता आन्दोलन चलाया गया था। इस आन्दोलन में हिमाचल प्रदेश के हमारे वीरों ने बढ़–चढ़ कर भाग लिया तथा बलिदान भी दिये। आन्दोलनकारियों में आर्य समाजों की भूमिका भी सराहनीय रही। इसी सन्दर्भ में २७ फरवरी सन् १९३० ई. को समूचे देश में महात्मा गांधी ने सविनय अवज्ञा आन्दोलन चलाये जाने की घोषणा की थी जिसके अन्तर्गत विदेशी वस्तुओं का बहिष्कार करना, अंग्रेज़ी शिक्षा का परित्याग, ब्रिटिश सरकार को टैक्स न देना, नमक कानून भंग करने का निश्चय और शान्तिपूर्ण ढंग से स्वतन्त्रता प्राप्ति के लिए आवाज़ बुलन्द करना आदि मुख्य मुद्दे थे। यह सविनय अवज्ञा आन्दोलन हिमाचल प्रदेश में भी व्यापक फैल गया। इस आन्दोलन में हिमाचल प्रदेश के जहाँ विभिन्न नगरों ने अपना अमूल्य योगदान दिया वहाँ कुल्लू जनपद के आर्य समाज की प्रमुख भूमिका थी। आर्य समाज कुल्लू के अनेक वरिष्ठ और देशभक्त कार्यकर्त्ताओं ने इस आन्दोलन में सक्रिय भाग लिया।

प्रस्तुत लेख भाषा एवं संस्कृति विभाग हिमाचल प्रदेश "शिमला" द्वारा प्रकाशित हिमाचल प्रदेश में स्वतन्त्रता संग्राम संक्षिप्त इतिहास नाम पुस्तक के द्वितीय संस्करण सन् १९९६ ई. के पृष्ठ १०३ से साभार उद्धृत किया गया है। जिसमें आर्य समाज कुल्लू के प्रमुख सदस्यों के योगदान का उल्लेख है। इसमें उल्लिखित लाला मेला राम जी आर्य समाज के पूर्व संरक्षक स्व. श्री मित्र भूषण के पिता थे, महाशय आत्मा राम जी वर्तमान में हि. प्र. आर्य प्रतिनिधि सभा के महामन्त्री श्री सत्यपाल भटनागर के पिता थे तथा पं. गोविन्द जी आर्य समाज कुल्लू के प्रधान रहे।

सविनय अवज्ञा आन्दोलन में कुल्लू में कांग्रेस कमेटी और आर्य समाज के नेताओं ने विशेष भूमिका निभाई। इसमें लाला शिवदयाल सलहुरिया, उनके पुत्र वेद व्यास, लाला मेला राम, महाशय आत्मा राम, पं. गोविन्द राम, राम चन्द, अमर चन्द सोहल आदि ने जनता का नेतृत्व किया और आन्दोलन की गतिविधियों को गांव–गांव तक पहुंचाया। १० मार्च १९३० ई. को अखाड़ा बाज़ार में एक विशाल जन सभा का आयोजन किया गया। इसमें स्थानीय नेताओं ने "वन्दे मातरम्" के जयघोष के साथ आन्दोलन का आरम्भ किया और गांधी जी तथा भारत माता की जय–जय के नारे लगाए। इस अवसर पर आस–पास के गांवों से आए लोगों से राष्ट्रीय आन्दोलन में भागीदारी निभाने का आग्रह किया गया। सविनय अवज्ञा आन्दोलन का कार्यक्रम भी जनता के सामने रखा गया। इसके पश्चात् आन्दोलनकारियों ने सक्रिय वर्करों के छोटे–छोटे जत्थे बनाकर गांवों में भेज दिए। इन जत्थों ने गांव के लोगों में राष्ट्रीय आन्दोलन के प्रति जागृति लाने के प्रयत्न किये और सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कार्यक्रमों को जनता तक पहुंचाया।

२५ अप्रैल १९३० ई. के लगभग शहर में मेले के अवसर पर ढालपुर मैदान में एक विशाल जुलूस निकाला गया जो सरवरी, सुल्तानपुर और अखाड़ा बाज़ार से होते हुए वापस ढालपुर पहुंचा। यहां पर शाम के समय एक जलसा हुआ जिसमें लाला शिवदयाल, महाशय, आत्मा राम और पं. गोविन्द राम आदि ने जोश भरे भाषण दिये और आन्दोलन में आई प्रजा को सविनय अवज्ञा आन्दोलन के कार्यक्रमों का ब्यौरा बतलाया। मई–जून में भी जलसे व जलूसों का सिलसिला जारी रहा।

महर्षि दयानन्द की महानता

संसार के महापुरूषों में दयानन्द की शान निराली है। अन्य महापुरूषों में किसी में एक गुण है तो किसी में दूसरा, कोई विद्वान है तो योगी नहीं। कोई योगी है तो सुधारक नहीं, कोई सुधारक है तो निर्भीक नहीं। कोई निर्भीक है तो ब्रह्मचारी नहीं, कोई ब्रह्मचारी है तो संन्यासी नही। संन्यासी है तो निर्भीक वक्ता नहीं। कोई वक्ता है तो लेखक नहीं। कोई लेखक है तो सदाचारी नहीं। कोई सदाचारी है तो कोई परोपकारी नहीं। कोई परोपकारी है तो कर्मठ नहीं। कोई कर्मठ है तो त्यागी नहीं। कोई त्यागी है तो देशभक्त नहीं। कोई देशभक्त है तो वेद भक्त नहीं। कोई वेद भक्त है तो उदार नहीं। कोई उदार है तो शुद्ध आहार नहीं। कोई शुद्धधारी है तो योद्धा नहीं। कोई योद्धा है तो सरल व दयालु नहीं। कोई सरल व दयालु है तो संयमी नहीं। परन्तु आप ये सभी गुण एक जगह देखना चाहे तो देव दयानन्द में देख सकते हैं। आचार्यों के आचार्य, परिव्राजक सम्राट, वेदविद्याद्यिपति, शास्त्र निष्णात, सर्व तत्र स्वतंत्र व्याकरण महोदधी, ब्राह्मण कुल कमल भास्कर, शास्त्रार्थ महारथी, दिग्गज, मेधावी, अद्भुत, अलौकिक, तार्किक, मुक्त आत्मा।

जगद्गुरू महर्षि दयानन्द सरस्वती

संग्रहकर्ता : वेद प्रकाश पंसारी, हरियाणा

''प्याऊ''

(एक लुप्त होती उपयोगी परम्परा)

♦सत्यपाल भटनागर, अखाड़ा बाजार, कुल्लू (हि० प्र०)

समाज में परम्परायें जन्म लेती और टूटती हैं। उपयोगी परम्पराऐं संस्कृति का अंग बन जाती हैं। यदि इनमें समय के साथ परिवर्तन न आये या ये अपनी उपयोगिता खो दें, तो इनका अन्त हो जाता है। ऐसी ही एक 'प्याऊ' की परम्परा थी। रास्ते के किनारे किसी छाया दार वृक्ष के नीचे पीने के पानी का प्रबन्ध किया होता था। जल ठण्डा रहे, इसके लिये रेत के उपर, मिट्टी के घड़ों में जल भरा होता था। पैदल यात्री वृक्ष की छाँव में विश्राम भी करते थे तथा अपनी प्यास भी बुजाते थे। कई स्थानों में पानी पिलाने वाला भी होता था। 'प्याऊ' की व्यवस्था ग्रीष्म ऋतु में चैत्र से आषाढ़ मास तक या वैशाख शुक्ल पक्ष से ज्येष्ठ शुक्ल पक्ष तक की जाती थी।

हमारे समाज में ऋतु अनुसार दान की प्रथा है। शर्द ऋतु में कम्बल या रज़ाई, बरसात में छतरी, ग्रीष्म में पंखा, घड़ा आदि दान किये जाते हैं। अन्न तथा वस्त्र मानव की मूल आवश्यकतायें जिनका दान सारे वर्ष चलता रहता है। समाज के आर्थिक रूप में कमजोर वर्गों की सहायता इस प्रकार हो जाती थी और वे ऋतु की कठोरता का सामना सरलता से कर लेते थे। इससे समाज में भी एक अच्छा संदेश जाता था, दूसरों को सुखी बनाकर सुखी होना, प्रसन्न कर प्रसन्न होना तथा अपने विकास में दूसरों को भागीदार बनाकर आत्मिक आनन्द प्राप्त करना, हमारे धर्म और संस्कृति के मूल उद्देश्य हैं। इससे त्याग और मिल बैठकर बांट कर खाने की प्रवृति को भी बढ़ावा मिलता है।

बसन्त ग्रीष्मोमध्ये यः जलं प्रयद्धति।
पले पले स्वर्णस्य फलं प्राप्तनोति मानवः।।

(बसन्त तथा ग्रीष्मकाल में जल पिलाने वाले व्यक्ति को स्वर्ण के दान के बराबर फल मिलता है।

इस फल प्राप्ति की इच्छा वाले 'प्याऊ' लगाया करते थे। अभी भी निर्जला अकादशी के दिन हमें स्थान–स्थान पर शर्बत इत्यादि पिलाते लोग दिखाई देते हैं। जल पिलाना पुण्य कार्य माना जाता था। ऐसी धारना थी कि यदि कोई प्यासा व्यक्ति किसी बस्ती से गुजर जाये, तो उस बस्ती का भाग्य क्षीण हो जाता है। उपभोक्तावाद की बढ़ती प्रवृति तथा जल के बाजारीकरण ने 'प्याऊ' परम्परा की समाप्ति कर दी है। जब एक लीटर पानी सोल्हा रूपये में बिक रहा हो और पानी की बोतलें भी आसानी से उपलब्ध हों, तो कौन निःशुल्क पानी पिलाये। परन्तु एक समय ऐसा भी था, जब पानी बेचना पाप समझा जाता था। श्री रविन्द्र नाथ टगौर ने अपने 'सभ्यता एवं प्रगति' पर एक लेख में लिखा है कि वह अपनी कार में परिवार के साथ एक ऐसे गाँव में गये जहाँ पानी आठ किलोमीटर दूर से लाया जाता था। उन्होंने एक अपरिचित ग्रामीण से पानी मांगा। सभी ने पानी पिया और कार के इंजन में पानी डाला गया। कोई घड़ा भर पानी लिया होगा। बदले में वह उसे धन देना चाहते थे। परन्तु उस व्यक्ति ने यह कहते हुए धन लौटा दिया, ''राम–राम कोई पानी के भी पैसे लेता है। आप मुझे पैसा देकर पाप का भागीदार बनायेंगे। ''टैगोर आगे लिखते हैं कि वह कलकत्ता आये। उन्होंने चाय वाले से एक गिलास पानी मांगा। उसने पानी दिया और साथ ही एक आना मूल्य मांगा। जबकि हुगली नदी उस समय कलकत्ता के साथ बहती है।

भारत में अंग्रेजों का राज्य था और आना, दोआना, चब्बनी, अठ्ठनी आदि सिक्के चलते थे। प्रायः शहर के लोग, ग्रामीणों से अधिक सभ्य समझे जाते हैं। परन्तु वास्तव में सभ्य कौन था, आप स्वयं अनुमान लगा सकते हैं।

कम्पनियाँ अपने उत्पादों का खूब विज्ञापन करती हैं। बोतलों का पानी तभी बिकेगा जब चश्मों के पानी को अशुद्ध एवं स्वास्थ्य के लिये हानिकारक बताया जाये। पानी को साफ करने के उपकरण भी तभी बिकेंगे जब पानी से उपजने वाले रोगों का भय मन में बैठा दिया जाये। इन कारणों से अगली पीढ़ी उन परम्परागत चश्मों और बावड़ियों (बावलियों) से भी मुंह मोड़ने लगे हैं; जिनके पानी का प्रयोग उनके पूर्वज पीढ़ी–पीढ़ी करते रहे। उस समय उन पानी के स्त्रोंतों को स्वच्छ रखना गाँव का हर व्यक्ति अपना नैतिक कर्तव्य समझता था। परन्तु जब पानी प्रयोग ही नहीं करना तो उसकी सफाई का कष्ट भी क्यों किया जाये। इसी कारण से जल स्त्रोतों की अवेहलना होने लगी। अब हर गाँव तक सड़क जाती है। अधिकतर घरों में वाहन हैं। बस सेवा आसानी से मिलती है। पैदल यात्रा का चलन प्रायः बन्द हो गया है। कई एक किलोमीटर चलने के लिये घंटों बस की प्रतीक्षा करते हुए भी देखे गये हैं। ऐसी परिस्थितियों में प्याऊ की आवश्यकता नहीं रही। स्थान–स्थान पर नलके और हैंड पम्प लगे हैं परन्तु अब भी कुछ लोग 'प्याऊ' की भावना से प्रेरित सार्वजनिक स्थानों में वाटर कुलर लगाते हैं ताकि प्यासे व्यक्ति ठण्डा पानी पी सकें। भौतिकवादियों ने भी इसका तोड़ ढूंढ निकाला है। वे स्थान–स्थान पर वाटर ए.टी.एम. लगा रहे हैं जिससे दस रुपये का एक लीटर पानी प्राप्त होगा। दया, धर्म तथा पाप पुण्य की बातें अब बहुत पुरानी हो गई हैं। अब तो धन के तराजु से तुलकर और धन की छाननी से छनकर ही वस्तु उपलब्ध होगी।

महर्षि का जीवन प्रेरक एवं मार्गदर्शक है

♦खुशहाल चन्द आर्य, महात्मा गांधी रोड़, कोलकता

मैंने पहले एक लेख आदरणीय डॉ. महेश जी विद्यालंकार की पुस्तक ''ऋषि दयानन्द की अमर गाथा'' ''शीर्षक से लिखा था। उस लेख में एक लेख इसी पुस्तक से लिखी थी, दूसरा लेख इसी भांति है।

ऋषिवर दया, करूणा और मानवता के सागर थे। वे सदा गाली देने वाले को फल व मिठाइयाँ, जहर देने वाले को क्षमा दान तथा विरोधियों को सम्मान देते थे। वे कभी अपने सुख–दुःख के लिये न चिन्तित हुए और न रोये, मगर देश, धर्म, जाति की दुर्दशा, नारी की दुर्गति और देश में फैले हुए अज्ञान, ढ़ोंग, पाखण्ड, गुरूडम पर निरन्तर व्यथित होते रहे और उसे दूर करने के लिये संघर्ष करते रहे। उन्हें सदा यही पीड़ा व्यथित किये रहती थी–भारत पुनः जगद्गुरू के गौरव पद पर कैसे प्रतिष्ठित हो ? धर्म, भक्ति तथा परमात्मा के नाम पर फैली हुई–मनगढन्त पोप लीलाएँ कैसे दूर हों। इन झूठे पाखण्डी गुरूओं, महन्तों संतों आदि की इन भोली–भाली जनता को बहकाने, ठगने की प्रवृत्ति पर कैसे विराम लगे ? देश सत्यज्ञान एवं विद्या के प्रकाश से प्रकाशित होकर, दुःख, दैन्य, निर्धनता, रोग–शोक, पशुता आदि से मुक्त हो। ऋषि की मार्मिक पीड़ा यही रही है :–

इक हूक सी दिल में उठती है, इक
दर्द जिगर में होता है।
हम रात को उठकर रोते हैं, जब
सारा आलम सोता है।।

ऋषि सदा देश के दुर्भाग्य, कलह, पतन एवं परस्पर की फूट पर रोये। जो देश कभी शांति, सुख, मानवता और धन–धान्य का भण्डारी था। आज वह कितनी दीन–हीन अवस्था में है। यह पीड़ा उन्हें सदा बेचैन रखती थी। एक दिन प्रयाग में स्वामी जी गंगा के किनारे बैठे हुए प्राकृतिक सौन्दर्य का आनन्द ले रहे थे, उन्होंने देखा–एक माता मरा हुआ बच्चा हाथों पर उठाये हुए गंगा में प्रविष्ठ हुई, कुछ गहरे पानी में जाकर उसने बच्चे के शरीर पर लपेटा हुआ कपड़ा उतार लिया, रोते–बिलखते हुए बालक के शव को उसने पानी में प्रवाहित कर दिया। ऋषि इस हृदय विदारक दृश्य को देखकर अपने को संभाल नहीं सके। करूणा स्वर से बोले–हाय! हमारा देश इतना निर्धन हो गया है कि मृतक शरीर को कफन भी नहीं जुड़ता ? उनकी आंखों से आंसुओं की धारा अविरल बहने लगी। कभी यह भारत धन–धान्य, ऐश्वर्य और विभूतियों से भरा–पूरा था सोने की चिड़िया कहलाता था, आज देश की यह दयनीय दशा है ? वे देश की निर्धनता तथा दुर्दशा पर घंटों चिन्तन–मनन करते रहे।

ऋषि दयानन्द ने देश भर का भ्रमण किया उन्होंने व्यक्तित्व, वाणी तथा लेखनी से सभी को प्रभावित किया। जिधर से निकले, उधर ही वैचारिक क्रान्ति, सत्य तथा वेदानुकूल विचारों की छाप छोड़ते गये। अनेक राजे–महाराजे, धनी–मानी उनके शिष्य बन गये। बड़े–बड़े धुरन्धर विद्वानों से उनके शास्त्रार्थ हुए। सभी उनकी विद्या, बुद्धि तथा तेज और बल से प्रभावित थे। उन्होंने दुनियाँ को झुकाया, पर स्वयं नहीं झुके। दूसरों को बदला, स्वयं नहीं बदले। जो भी उनके सम्पर्क में आया, उसके विचारों और जीवन का कायाकल्प हो गया। उनके व्यक्तिव एवं कृतित्व में अद्भुत चुम्बकीय आकर्षण था। घोर शत्रु भी उनके सामने नतमस्तक हो जाते थे। वे दिव्य गुणों के खान थे। उनका सम्पूर्ण जीवन प्रेरक, आदर्श, शिक्षाप्रद और जीवनदायक था। उनके दिव्य जीवन से न जाने कितनों ने अपने जीवन संभाले और ऊपर उठे। प्रेरक घटनाओं, बातों और उपदेशों से इतिहास भरा पड़ा है। ऋषि का जीवन–दर्शन हमारे लिए मील का पत्थर है।

भोगी, विलासी और दुर्व्यसनों में फँसे मुंशीराम के जीवन को ऋषि के एक भाषण ने बदल दिया। उनके जीवन ने ऐसी करवट बदली कि वे मुंशीराम से स्वामी श्रद्धानंद बन गये। स्वामी श्रद्धानन्द ने देश–धर्म–जाति के लिए जो प्रेरक कार्य किये हैं, वे हमेशा स्वर्णाक्षरों में अंकित रहेंगे। यदि हम जीवन उत्थान, निर्माण तथा देश, धर्म, जाति आदि की सेवा का पाठ व शिक्षा लेना चाहें तो स्वामी श्रद्धानन्द से बढ़कर कोई प्रेरक जीवन न मिलेगा।

मुंशीराम की तरह ही अमीचन्द का जीवन की बुराइयों तथा दोषों से भरा हुआ था। किसी सभा में ऋषिवर के प्रवचन से पूर्व उन्होंने भजन सुनाया। भजन बड़ा ही मधुर था। लोगों ने अमीचन्द के बारे में ऋषिवर को बता रखा था। सहज ही ऋषि जी की सत्य वाणी निकली–अमीचन्द! हम हो तो हीरे मगर कीचड़ में फंसे हो। इस प्रेरक व प्रभावी वाक्य ने अमीचन्द के जीवन को पलटकर रख दिया। बाद में इसी अमीचन्द ने भजनों के माध्यम से आर्य समाज का बड़ा प्रचार व प्रसार किया। ऋषि की वाणी और नजर में एक अद्भुत जादू था जो सिर पर चढ़कर बोलने लगता था। मृत्यु का अन्तिम दृश्य ऋषि की सहनशक्ति, आस्तिकता, प्रभुभक्ति, मृत्यु से निर्भयता आदि को देखकर नास्तिक गुरूदत्त आस्तिक बन गये। उनके विचार बदल गये। उन्होंने सारा जीवन आर्य मुसाफिरी में गुजार दिया। ऋषि मिशन पर बलिदान होकर आर्यजनों को संदेश दे गये तकरीर और तहरीर का काम बंद न होने देना।

महात्मा हंसराज ने सारा जीवन सादगी, त्याग, सेवा और फकीरी में रहकर ऋषि मिशन को समर्पित कर दिया। ऋषि के जीवन चरित्र को देखकर न जाने कितने दीवाने, मस्ताने और जनून वाले बने हैं, उन सभी को स्मरण करना सीमित स्थान में संभव नहीं है। उन सभी के व्यक्तित्व, कृतित्व एवं योगदान को स्मरण व नमन।

ऋषि के जीवन की अनेक प्रेरक उदाहरण, घटनाएँ व बातें हैं, जो आज के जीवन और जगत् को संभलने, सुधरने व ऊपर उठने की शिक्षा व प्रेरणा देती हैं। स्वामी जी का जीवन खुली किताब था। उनकी कथनी और करनी एक थी। उन्होंने जो कहा उसे कर दिखाया। प्रभुविश्वास तथा सत्य उनके जीवन का आधार था।

महर्षि दयानन्द ने जीवन भर गलत बातों, ढ़ोंग, पाखण्ड, मूर्तिपूजा, अवतारवाद, अन्धविश्वास आदि से कभी समझौता नहीं किया। यदि किया होता तो वे उन्नीसवीं शताब्दी के सबसे बड़े भगवान् होते। उनका व्यक्तित्व अद्वितीय गुणों तथा यौगिक सिद्धियों से परिपूर्ण था। मगर वे इतने महान् व निरहंकारी थे, सदा साधारण मानव बनकर ही अपना सम्पूर्ण जीवन व्यतीत किया। हम आर्यजन स्वार्थ, लोभ, पद आदि के लिए कदम–कदम पर सिद्धांत विरूद्ध बातों से समझौता करने के लिए तैयार हो जाते हैं। असत्य बातों से आत्मा को पतित कर लेते हैं। हमें ऋषि के प्रेरक जीवन से शिक्षा व सत्यपालन का व्रत लेना चाहिए।

धूप-छाया

मनुष्य जीवन सघर्षों से भरपूर सुख–दुःख बसंत पतझड़ और धूप छाया जीवन में आती जाती रहती है। कर्मशील मनुष्य कर्म करता हुआ जीवन पथ पर अग्रसर रहता है। जो जीवन में सघर्षों का बहादुरी से मुकाबला करता रहता है वह कभी और किसी भी परिस्थिति में बड़े से बड़े तुफान से नहीं घबराता है। वह दोषारोपण नहीं करता। वह तो अपने कर्तव्य पथ पर बढ़ता रहता है चाहे जो भी घटित हो। वह मुखमण्डल में मुस्कान लिए उसका सामना करता रहता है। कवि ने ठीक ही लिखा है। इस विशद विश्व प्रवाह में किसको नहीं बहना पड़ा। सुख–दुःख हमारी तरह किसको नहीं सहना पड़ा। फिर क्यों कहता फिरूं मुझ पर विधाता बाम है चलना हमारा काम है। हमें बड़ी से बड़ी भीष्ण से भीष्ण कठिनाईयों का बहादूरी के साथ दो हाथ करने के लिए सर्वदा तैयार रहना चाहिए विघ्न परिस्थितियों में घबराकर विपरीत परिस्थिति में समझौता नहीं करना चाहिए। जैसे चांद घटाओं में मुस्कुराता हुआ सुन्दर लगता है। वैसे ही किसी भी विपति का कर्म से प्राणी, धैर्य, दरिद्रता से मुकाबला करता रहता है। वह जीवन पथ पर आगे बढ़ना ही कर्म, धर्म और जीवन का मर्म मानता है। आज हमारे मध्य में दैनिक मठ चम्बा का होनहार युवक ऋषि कुमार केवल ३४ साल की आयु में अपने दायित्वों को समान बोझ अपने माता–पिता स्वामी सुमेधा नंद जी महाराज तथा सम्बधियों के कंधों पर छोड़कर सदा–सर्वदा के लिए संसार से विदा हो गया। जो अत्यन्त दुर्भाग्य और दुःख पूर्ण घटना है। ईश्वर के नियमों के आगे हमें नतमस्तक होना पड़ता है। आज ऋषि कुमार जी के माता श्रीमती सरस्वती पिता श्री महावीर तथा उनकी युवा पानी दुःख सागर में गोते खा रही है और ऋषि कुमार के अशहनीय कष्टों को बहादूरी से सह रही है। मुझे महाभारत को वह बात याद आ रही है। जब श्री कृष्ण हस्तिनापुर छोड़कर द्वारिका जाने लगे तो उन्होंने अपनी बुआ कुन्ती के पास जाकर चरण स्पर्श करते हुए कहा कि बुआ अब मैं द्वारिका रहा हूँ। कुछ मांगना चाहती हो तो मांग लो। कुन्ती ने श्री कृष्ण को देखते हुए अपने आंसुओं से भरपूर होते हुए कहा कि यदि तुम मुझे देना चाहते हो तो मुझे एक वस्तु अवश्य देकर जाओ। श्री कृष्ण बोला बुआ क्या मांगती हो। अपने बहते आसुओं से कुन्ती बोली माधव में चाहती हूँ। कि मेरे बालकों के ऊपर विपती के बादल मंडराते रहें। तो उनको समय–समय पर धर्म–कर्म–शर्म याद आती रहे। वह कर्तव्य पथ से कभी भी विचलित न हो। आपका कृपामय हाथ सदा उनके साथ रहे। हमारा कृष्ण के इन वाक्यों को छोटा न समझें केवल मात्र यह उद्देश्य है कि हमें कुन्ती की तरह विरोधों का सामना करते हुए उनका सदा स्वागत करते रहना चाहिए। आज विपत्ति के इस घड़ी में प्रदेश की समस्त आर्य जनता श्री महावीर, उनकी पत्नी सरस्वती तथा स्वामी जी महाराज के पीछे खड़ी है। हम हर परिस्थिति में उनके साथ है तथा उनके मंगल–मांगल्य की प्रार्थना करते है। हम ऋषि कुमार जी के जीवन से प्रेरणा लेकर अपने जीवन को सुख और शांति से भरते रहे तथा जीवन से परोपकार और ईमानदारी की खेती करते रहे। तभी और तभी हमारा जीवन दुःख मुक्त बन सकता है। प्रभु की अपार कृपा सभी के साथ और शीतलता प्रदान करती रहे। अन्त में केवल मात्र यही कहूँगा कि :–

कबीरा हम जनमिया, जग–हंसे हम रोये
ऐसी करनी करी चलो, हम हंसे जग रोये।

–कृष्ण चन्द आर्य

'संवेदनशीलता'-जीवन का एक पहलू

♦सुकामा आर्या, ऋषि उद्यान, पुष्कर मार्ग, अजमेर

हम लोग एक स्तर पर जीवन जी रहे हैं, जहाँ संवेदनशीलता का बहुत बड़ा योगदान है। हमारे जीवन की शैली में संवेदनशील एक अहम रोल अदा करती है। कौन कितना संवेदनशील है यह व्यवहार का, चरित्र का एक मापदण्ड भी माना जाता है। संवेदनशीलता को हम अलग–अलग नजरिए से देखते हैं।

सर्वप्रथम स्वयं को लें–हम स्वयं के प्रति कितने संवेदशील हैं ? हम कहाँ तक अपनी भावनाओं, विचारों को पकड़ पा रहे हैं ? हम स्वयं की अनुभूतियों को कहाँ तक समझ पाते हैं ? ये हमारी संवेदनशीलता के स्तर का निर्धारण करता है।

फिर हम दूसरों, अपने आस–पास के लोगों के प्रति कितने संवेदनशील हैं ? यहाँ पर हम अक्सर गलती कर जाते हैं। हमें लगता है हम पढ़–लिखकर गए हैं, अफसर हो गए हैं, विद्वान् हो गए हैं, हम अपने औहदे पर हैं–चूँकि कोई हम पर आक्षेप नहीं उठा सकता है। हम कुछ–कुछ उपेक्षा भाव से संवेदशील होते जाते हैं। दूसरों की भावनाओं को समझने का प्रयास ही नहीं करते हैं। अगर हम समझ भी जाते हैं तो हम अपने अहं के सामने उनको स्वीकार नहीं करते। इस तरह धीरे–धीरे हम वातावरण के प्रति, परिवारजनों के प्रति, साथी कर्मचारियों के प्रति, शिष्यों के प्रति असंवेदनशील होते जाते हैं। हमें ऐसा लगने लगता है कि जो हमारे बनाए मापदण्ड, मयार पर पूरा नहीं उतरता वह व्यक्ति किसी भी स्तर का नहीं है या यूँ कहें कि हम उसके स्तर पर आकर सोचना ही नहीं चाहते। बस अपना फतवा जारी कर देते हैं या मन में एक निश्चित धारणा बना लेते हैं। उस व्यक्ति से ऐसा कार्य किस कारण से हुआ ? उसकी सोच उस समय क्या थी ? किन भावनाओं, संवेदनाओं के दबाव में उसने कुछ विशेष कार्य किया–हम जानने का प्रयास ही नहीं करते हैं। बस व्यक्ति विशेष पर प्रतिक्रिया कर देते हैं। सभा में कुछ खास शब्द बोलकर इंगित कर देते हैं। यह असंवेदनशीलता का परिणाम है। यह सभ्य समाज में स्वीकार्य नहीं होता है।

तीसरा संवेदशीलता का पहलू है–हम क्या महसूस करते हैं कि ईश्वर कितना संवेदनशील है ? How sensitive and responsive God is to our prayers ? सच्चे हृदय से की गई पुकार को वह बहुत करीब से सुनता है। उनको कर्माशय के अनुसार पूरा भी करता है। वह हमारी प्रार्थना को ज्यों का त्यों समझता है। यह हमारे लिए बहुत ही सौभाग्य की बात है। यह वरदान है। अगर हम किसी की भावनाओं को आहत करते हैं, उसके दिल को दुखाते हैं तो उस दुःखी व्यक्ति की पुकार पर ईश्वर द्रवित हो उठता है। उसके हृदय से निकली हुई पुकार इतनी पुरजोर होती है कि वह पूरी कायनात को हिला सकती है :–

मत सता ज़ालिम किसी को, मत किसी की आह ले,
कि दिल के दुःख जाने से नादां, अर्श भी हिल जाएगा।

सो हम इस बात पर ज्यादा ध्यान दें कि हम भाव शून्य न हो जाएँ, सड़क पर चलते समय, रेल में यात्रा करते समय, आस–पास के व्यक्तियों परिस्थितियों के प्रति संवेदनशील रहें। कुछ आवश्यकता होने पर सहयोग दें, अपनापन दिखाएँ, आत्मवत् व्यवहार करें क्योंकि :–

दुःखिया पास पड़ा है तेरे, तूने मौज उड़ाई तो क्या ?
भूखा, प्यासा पड़ा पड़ोसी, तूने रोटी खाई तो क्या ?

कोई दूसरा व्यक्ति आपके व्यवहार से ही आपकी योग्यता को पहचानता है, जानता है, महसूस करता है, कोई भी आपके प्रमाण–पत्र नहीं देखता। हममें से कईयों को तो याद भी नहीं होगा कि उनके विभिन्न प्रकार के, विभिन्न क्षेत्रों के प्रमाण–पत्र कहाँ रखे हैं ? जीवन में कागजी प्रमाण–पत्रों की अपेक्षा व्यक्तियों के द्वारा बोले गए प्रशंसनीय शब्द, ज्यादा कीमती हैं। यह मौखिक प्रमाण–पत्र जीवन पर्यन्त हमें उत्साह देते हैं, प्रेरणा देते हैं। उन्हें प्राप्त करने व संजो कर रखने का प्रयास करना चाहिए क्योंकि ये Ever Lasting होते हैं अर्थात् मृत्यु के बाद भी इन्हीं की बदौलत हमारा नाम दुनिया में कायम रहता है। इन प्रशंसनीय शब्दों की उत्साहवर्धक शब्दों की हमारे साथ एकरसता होने से, अलग भौतिक सत्ता न होने से हमारे जहन में रहते हैं। इसीलिए कहते हैं कि You are as you present your self.

कई बार हम अपने अत्यन्त निकटतम परिजनों के प्रति ज्यादा असंवेदनशील होते हैं क्योंकि वहाँ हम औपचारिकता का मुखौटा उतार कर व्यवहार करते हैं। बाहर समाज में तो हम सभ्य दिखने के प्रयास में कुछ संवेदनशील रहते हैं। परन्तु घर, परिवार, सदस्यों के प्रति, पड़ोसियों के प्रति हम थोड़े उपेक्षा भाव से व्यवहार करने लगते हैं क्योंकि We take them gauranteed. हमें निश्चय होता है कि यह व्यक्ति तो मेरा ही है। मुझे

समझता है, जानता है, पहचानता है। यह मेरी पत्नी है, माँ है, भाई है, पिता है ये मेरा ख्याल रखेंगे ही। इसी बात से हम आश्वस्त रहते हैं, यह अतिविश्वास भी उनकी भावनाओं की कद्र न करने में सहयोगी कारण होता है। हम यहाँ से भूल जाते हैं कि :–

जो आज आसमान में उड़ रही है,
कल वो कट के गिर भी सकती है।

आज अगर ईश्वर कृपा से सब व्यवस्थित है, सम्यक् है तो कल को परिस्थितियाँ विकट भी हो सकती हैं। खासतौर से हमें जीवन के आधार–भावनाओं, संवेदनाओं व अनुभूतियों को पकड़ कर रखना चाहिए।

यह संवेदनशीलता का चरमोत्कर्ष होता है जब हम किसी मन्दबुद्धि को भी मन्दबुद्धि नहीं कहते। नेत्रहीन को अन्धा नहीं कहते सूरदास या प्रज्ञा चक्षु कहते हैं, उनकी भावनाओं को व्यथित नहीं होने देते। उनके हृदय को आघात नहीं पहुँचाते। उसी प्रकार सामान्य व्यवहार करते समय भी हमें दूसरे की जीवन के नकारात्मक पक्ष को सामने लाकर उनके हृदय को अहित नहीं करना चाहिए। अपनी सोच को विस्तृत करें। विस्तार में प्रेमभाव, एकरूपता, समानता, समता प्रकट होती है। संकीर्णता की चार दीवारी से ऊपर उठकर व्यवहार करें, संवेदनशीलता को बढ़ाएँ।

संवेदनशीलता बढ़ाने की प्रक्रिया तो यही है कि पहले हम अपने प्रति क्षण–क्षण में संवेदनशील हों। मैं क्या सोच रहा हूँ ? किसका विचार उठ रहा है ? क्यों मैं ऐसा महसूस कर रहा हूँ ? सुख–दुःख, ग्लानि, क्षोभ, घृणा, द्वेष ये सब कब–कब मेरे मन में हावी हो जाते हैं ? चलते, फिरते, उठते, बैठते सूक्ष्मता से इन विचारों को, भावनाओं को महसूस करने की आदत डालें।

इसी प्रकार फिर धीरे–धीरे दूसरों पर यही प्रक्रिया करें। जानेंगे कि वह क्या चाहता है ? उसकी मुझसे कब–कब क्या–क्या अपेक्षा होती है ? कहाँ तक मैं दूसरों को शान्त व संतुष्ट करने में सहयोग कर सकता हूँ इस प्रकार हमारे सम्बन्ध सुधरेंगे, भावनात्मक स्तर पर हम अपने प्रियजनों के निकट होंगे। हम दूसरों को समझेंगे तो हमें भी समझने वाले दुनियाँ में मिल जाएंगे। बस थोड़ी सी अपनी सोच, अपना नज़रिया बदल कर देखें–'सभी अपने ही हैं' यह महसूस होगा और यूँ भी :–

कुछ देर है अंधेर नहीं, सौदा है अदल परस्ती है,
इस हाथ करो, उस हाथ मिले, यहाँ सौदा दस्त बदस्ती है।

देव दयानन्द

दुनिया वालो पहचान लो
ये देव दयानन्द हैं।।
निडर हैं निर्भय हैं
टंकारा के आनन्द हैं।।
निर्मल हैं निश्छल है
सुसौरभ हैं, मकरन्द हैं।।
ब्रह्मचारी हैं बलिष्ठ हैं
आनन्द भी हैं सुआनन्द भी हैं।
वेदों के मूल कन्त हैं
पाखण्ड नाशक हैं, राष्ट्र उद्धारक हैं।।
नारी रक्षक हैं धर्म सुधारक हैं
स्वराज घोषक हैं सत्यार्थ प्रकाशक हैं।।
वेदेज्ञ हैं ये वेदों के प्रचारक हैं
आर्यों की शान हैं महर्षि महान् हैं।।
दुनिया वालों पहचान लो।
आर्येश ये देव दयानन्द हैं।।
जब अपने ही अपने नहीं हुये
औरों का शिकवा भला क्या करें।।
'आर्ये' अपनी ही जुबां बेकाबू हुई
गैरों पर बन्दिश क्या करें।।

–स्वामी आर्येश आनन्द सरस्वती, राजस्थान

आपसी-झगड़े

भाई–बहिन की आपसी लड़ाई चिंता और अवसाद बढ़ाती है और आगे चलकर इससे मनोबल कम होने की आंशका भी होती है, लेकिन माता–पिता को अपने बच्चों के झगड़े में नहीं पड़ना चाहिए, वरना इससे दूसरी मानसिक समस्याएं पैदा हो सकती हैं। एक शोध के अनुसार बच्चों की लड़ाई में माता–पिता के हस्तक्षेप से दूरगामी भावनात्मक नुकसान पहुंच सकता है। इसकी बजाय माता–पिता बच्चों के लिए कुछ स्पष्ट नियम बना दें, ताकि झगड़े की संभावना कम हो जाए। पूर्व के अध्ययनों की तरह ही इस शोध का भी यही निष्कर्ष है कि माता–पिता घर में नियम बना दें, घर के सभी बच्चे उन नियमों का पालन करें। इससे झगड़े निपटाने में माता–पिता को मदद मिल सकता है। मिसौरी युनिवर्सिटी की निकोल कैम्पियॉन ने कहा कि "माता–पिता को कभी भी पक्षपात नहीं करना चाहिए। वीडियो गेम, कम्प्यूटर या टीवी के लिये समय निर्धारित कर देना चाहिए। इस प्रकार बच्चों के झगड़े की संभावना को कम किया जा सकता है।"

सौजन्य : राष्ट्रदूत

सेवा और सौदा

♦प्रो. धर्मवीर

जब हम किसी कार्य को धर्म समझकर करते हैं तो उसमें व्यक्ति की पात्रता, उसकी आवश्यकता पर निर्भर करती है, जबकि व्यवसाय में पात्रता उसकी आवश्यकता पर नहीं, अपितु उसकी आर्थिक सामर्थ्य पर टिकी है। सेवा करने वाला व्यक्ति केवल आवश्यकता को, उसकी पीड़ा को देखता है, जबकि व्यवसाय करने वाला व्यक्ति उसकी आर्थिक क्षमता को देखता है, उसका उसकी पीड़ा या आवश्यकता से कोई सम्बन्ध नहीं होता। सेवा का उत्कृष्ट स्वरूप होता है जब हम प्राणि मात्र को उसकी पीड़ा से पहचानते हैं, न कि जाति, लिंग, आकृति या हानि–लाभ से। भगवान् बुद्ध ने अपने शिष्यों को शिक्षा देकर प्रचार के लिए भेजा। एक शिष्य ने एक शराबी को देखकर उसे उपदेश देने का प्रयास किया, शराबी ने बोतल से उसका सिर तोड़ दिया। शिष्य ने गुरू जी के पास जाकर अपना हाल सुनाया, गुरू जी ने सुन लिया। उस समय कुछ न कहा फिर एक बार उसी शिष्य को लेकर उसी गाँव में गये, जहाँ वही शराबी रोग से दुःखी अकेला पड़ा था। भगवान् बुद्ध उसे उपदेश नहीं दिया, उसकी सेवा की, उसे साफ किया, उसकी औषध दी, उसको भोजन–पानी दिया, वह शराबी भगवान् बुद्ध का शिष्य बन गया।

जिस क्षण हम सेवा के बदले में कुछ चाहते हैं, तो वह सौदा हो जाता है। नेपाल के प्रसंग में यह घटना याद करने योग्य है। चर्च ने भूकम्प के समय बाइबिल की एक लाख प्रतियाँ नेपाल में भेजी, यह किसी भी प्रकार से सेवा की श्रेणी में नहीं आता। यह तो मौके का फायदा उठाना है, यह व्यापार है, सौदा है। चर्च कहीं भी सेवा नहीं करता, इस प्रसंग में एक घटना का उल्लेख करना उचित होगा। ईसाई प्रचारक फादर लेसर अब स्वर्गीय हो गये, उन्होंने अपनी व्यथा व्यक्त करते हुए कहा था–हमने भारत में चार सौ वर्षों से सेवा का कार्य किया, परन्तु भारतीय समाज अभी तक हम पर विश्वास नहीं करता। इसके उत्तर में मैंने निवेदन किया कि फादर, ईसाई चर्च कभी भी सेवा कार्य नहीं करता, वह सदा सौदा करता है, वह बदले में ईमान मांगता है। उसके हर सेवा कार्य के पीछे ईसाई बनने की शर्त रहती है। जब कभी हम अपने कार्य के बदले में दूसरे से कुछ चाहते हैं तो वह सेवा न होकर सौदा, व्यापार हो जाता है। हमारे ऋषियों ने सेवा को धर्म कहा है। धर्म स्थान एवं व्यक्ति की योग्यता नहीं देखता, उसकी पात्रता केवल उसकी पीड़ा है और उसका निराकरण का प्रयास सेवा है।

वार्षिक उत्सव

आर्य समाज कुल्लू में इस वर्ष भी पूर्ववर्षों की तरह वार्षिक उत्सव अत्यन्त धूम–धाम और हर्षोल्लास से मनाया। आर्य समाज के प्रधान श्री अशोक कुमार आनन्द ने अपनी समस्त कार्यकारिणी से इस उत्सव को सफल बनाने में चार–चांद लगाने में कोई कसर नहीं छोड़ी। यह बताना युक्ति–युक्त होगा। श्री अशोक कुमार आनन्द जी की आंखों में काला मोतियाँ आ जाने से उनके आंखों की ज्योति चली गई है। लेकिन वे बड़ी दक्षता तथा कर्मठता से रात–दिन कार्य करते हैं। वास्तव में उनकी श्रीमती जो सर्वगुणों सम्पन है अपने पति की आंखें बनकर कदम–कदम पर उनका साथ देती रहती है और उनके मनोबल को कभी भी गिरने नहीं देती, श्री अशोक आनन्द जी अपनी स्व. माता की लाडली संतान रही है उन्हें अपने इस पुत्र पर आयु पर्यन्त गर्व रहा, आंखों की ज्योति चले जाने से जब अशोक आनन्द के माता जी अपने पुत्र को किसी द्वारा लाते ले जाते उठते देखती थी तो उनका हृदय पीड़ा में समा जाता था वे अपने आंसुओं के कड़वे घूंट को पी जाती थी और अपने बेटे को ढाढस बंधाती रहती थी ताकि वह विकट से विकट परिस्थितियों में भी अपने आत्मबल का सहारा लेकर संघर्षों से जुझता रहे तथा आर्य समाज की सेवा करता रहे श्री अशोक कुमार अपने माता के निधन के उपरान्त भी दक्षता कर्मठता तथा लग्नशीलता से विपरीत परिस्थितियों को वे अनुकूल बनाते रहे। आज ईश कृपा से उनका परिवार पुष्पपित और कुसुमित होकर अपने सुंगन्धी प्यार चारों और फैला रहा है प्रभु के आशीर्वाद का हाथ उनके ऊपर है क्योंकि वे श्रेष्ठ कार्यों को करने में अपना समय लगाते रहे।

उनकी श्रीमति आर्य समाज के कार्यों को स्वस्थ और सुचारू रूप में चलाने में कोई भी कसर नहीं रखती प्रभु इनके परिवार को सुख शांति प्रदान करे।

कबीरा हम जनमिया, जग–हंसे हम रोये
ऐसी करनी करी चलो, हम हंसे जग रोये।

–कृष्ण चन्द आर्य

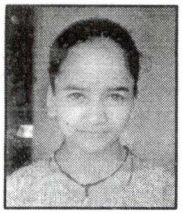

तकनीकी शिक्षा

परमादरणीय मुख्यातिथि महोदय, निर्णायक व भिन्न–भिन्न पाठशालाओं से आए हुए अध्यापक वर्ग, प्रिय विद्यार्थियों मैं अनीता, कक्षा आठवीं, राकीय माध्यमिक पाठशाला चलौणी की छात्रा आपके सामने ''तकनीकी शिक्षा का महत्व विषय पर अपने प्रकट करना चाहती हूँ।

आज का युग विज्ञान का युग है जिसका सामान्य अर्थ है विशिष्ट ज्ञान अर्थात् प्रकृति के गहरे रहस्यों की गुत्थी को सुलझाना तथा जिज्ञासा का उत्तर देना व ज्ञान प्राप्त करना ही विज्ञान है। विज्ञान के बदले चरणों को हम चिकित्सा, यातायात, संचार, उद्योग, कृषि आदि विभिन्न क्षेत्रों में देखा जा सकता है।

विज्ञान की तकनीक ने किया है मानव का उपकार।
एक से बढ़कर एक दिए हैं जन मानस को उपहार।।

सकल, कलाओं के कलियुग में विज्ञान तकनीक ने चिकित्सा के क्षेत्र में कई बुलन्दिया हासिल की जिनका उल्लेख कर पाना संभव ही नहीं बल्कि मुश्किल भी है। आज मेरा भारत संचार क्रांति, कृषि क्रान्ति, श्वेत क्रांति तथा आद्योगिक तकनीक में किसी से कम नहीं आंका जा सकता।

बटन दबाओ मनचाहा पाओ, हम सब ने पसीना बहाया है।
मेरे भारत बढ़ते जाना, कुछ पाना है कुछ पाया है।।

श्रोतागण! आज भारत में किसान तकनीकी शिक्षा के विश्वस्तरीय संस्थान खुल चुके हैं तथा इस संदर्भ में चहुँमुखी विकास हो रहा है। नई मशीनों के अविष्कार से औद्योगिक क्रांति आ चुकी है। आश्चर्यजनक उत्पादन हो रहा है। सरलतम साधनों का अविष्कार हो रहा है। आज अन्तरिक्ष के क्षेत्र में मनुष्य चंद्रमा ही नहीं बल्कि मंगल पर भी अपना परचम लहरा चुका है। मंगल की धरती पर भारतीय वैज्ञानिकों का पहला कदम रखना यह उनके परिश्रम और साहस को दिखा रहा है। इसलिए कहा जा सकता है कि अन्तरिक्ष की परतों के रहस्य विज्ञान के प्रयास प्रशंसनीय है।

मान्यवर, आज मेरे भारत का किसान तकनीकी संसाधनों का आश्रय लेकर माटी से हाथ लगाए बिना कई गुणा अनाज पैदा करता है। जिसका परिणाम है कि आज मेरे भारत का किसान घर–गाँव में उठाकर जी रहा है। क्योंकि किसान की खुशहाली में ही देश की तरक्की है। किसान का पसीना देश की भाग्य रेखाओं को बदलने वाला होता है। प्राचीन समय में संचार में साधन सीमित थे परन्तु आज संचार क्रांति आ चुकी है। संचार तकनीक के द्वारा मनुष्य की दूरियाँ आपस में कम हुई है। माँ का दुलार, पत्नी का प्यार! बुजुर्गों के संस्कार दिन–रात प्रगति के पथ पर हमारे साथ हैं।

सीमा प्रहरी बने तो सैनिक, माँ बच्चों से दूर नहीं।
गाँव की माटी की बातें करते, खत पढ़ने को मजबूर नहीं।

मान्यवर! आज मेरे भारत में यातायात के साधन इतने विकसित हो चुके हैं कि चंद घंटों में मीलों सफर तय किया जा सकता है। स्पेश जेट, मैट्रो ट्रेन, बुलेट ट्रेन ये सब विज्ञान की ही देन है जिसके कारण विश्व भ्रमण तक संभव हो गया है। आत्मनंद जी के शब्दों को मैं दोहराना चाहती हूँ कि संसार सिमटा तीन पग में सारी धरती एक है गाँव शहर अब दूर नहीं यही तकनीक और विवेक है।

यद्यपि विज्ञान ने जीवन के हर क्षेत्र में मनुष्य को अनेक उपहार दिये है तथापि भीष्ण अस्त्र–शस्त्र, परमाणु बम आदि मानव जाति को नष्ट करने के लिए मुंह बोले तैयार हैं। आज आवश्यकता है कि बड़े–बड़े राष्ट्र इन घातक हथियारों का प्रयोग न करके मानव कल्याण हेतु विश्व शांति बनाए रखें। आवश्यकता है कि हमें विज्ञान तकनीक का आश्रय लेकर मानव सुरक्षा संबंधी कदम उठाने होंगे क्योंकि उन्नति के साथ–साथ विनाश का होना यह प्रकृति का संदेश है। आज के विद्यार्थी कल के नागरिक हैं। आवश्यकता है कि हमें अपने ज्ञान–विज्ञान को विकसित करने की ताकि विज्ञान अभिशाप न बने सके और भविष्य की चुनौतियों से लड़ाई लड़ी जा सके।

धरती आसमां एक है आज नहीं रहा अब कुछ दूर।

राकेश, कल्पना हम भी बनेंगे तकनीकी शिक्षा लेंगे जरूर अतः देश के भावी नागरिक होने के नाते हमारा यह कर्त्तव्य बनता है कि हमें देश के चहुँमुखी विकास के लिए तकनीकी शिक्षा ग्रहण करने के उचित कदम उठाने होंगे।

–अनीता सुपुत्री श्री कांशी राम, गांव त्रिहवी, कक्षा–आठवीं,
रा. मा. पा. चलौणी, सुन्दरनगर, जिला मण्डी (हि.प्र.)

उपासना

♦सरला गौड़

उपासना से मेरा अभिप्राय प्रभु की भक्ति से शक्ति प्राप्त करना है। वही शक्तितारक है और दुर्गुण को दूर भगाने वाली है। कवि नन्दलाल जीने अनादि शक्ति का वर्णन करते हुए ठीक ही कहा है जगत जननी माँ हमें तेरा ही सहारा, तेरे सिवा कोई नहीं हमारा भव से कर दो पार नमस्कार–नमस्कार आए तेरे द्वार नमस्कार नमस्कार।

प्रभु के ध्यान में बैठकर हमें निरन्तर मिलजुल कर सहयोग भावना से बालक प्रभु से प्रार्थना करते हुए यह मांगते हुए दिखाई देते प्रतीत है।

वहा दो प्रेम की गंगा प्रेम का सागर हमें आपस मैं मिलजुल कर रहना सीखा देना। हमारे ध्यान मैं आओ प्रभु आंखों में बस जाओ अंधेरे दिल में आकर परम ज्योति जगा देना। हमारे जीवन का लक्ष्य मानव धर्म, मानव सेवा, कर्म, मर्म, धर्म होना चाहिए।

जब सन्त जन आते हैं तब संस्कृति मुस्कुराती है

♦डॉ. सुरेन्द्र कुमार शर्मा, आर्य वानप्रस्थ आश्रम, ज्वालापुर (हरिद्वार)

जब बसन्त आता है तब प्रकृति मुस्कुराती है।
और जब संत जन आते हैं तब संस्कृति मुस्कुराती है।।

प्रकृति व्यग्रतापूर्वक प्रतीक्षा करती है कि कब बसन्त आए और उसे मुस्कुराने का मौका मिले परन्तु इस मुस्कान को प्राप्त करने के लिए उसे पहले शीत की सिहरन झेलनी पड़ती है। इसी प्रकार जब संत, महापुरुष, ऋषि या विद्वत् जन इस धरा पर पदार्पण करते हैं तब संस्कृति मुस्कुराने लगती है परन्तु उसे भी पहले अभाव में जीना पड़ता है, सामयिक दुर्विचारों के थपेड़े झेलने पड़ते हैं तथा सामाजिक चीत्कार, हाहाकार आदि की तपिश सहनी पड़ती है। ये सब बातें संतों के पधारने की पृष्ठभूमि कही जा सकती है। भगवत् गीता में इसी तथ्य को 'धर्म की ग्लानि' और 'अधर्म का अभ्युत्थान' कहा गया है :–

''यदा यदा हि धर्मस्य ग्लानिर्भवति भारत।
अभ्युत्थानमधर्मस्य तदात्मानं सृजाम्यहम्।।''

यह संस्कृति है क्या ? यह है प्राचीन वैदिक विचार धारा का गोमुख, वेद, उपनिषद्, दर्शन, साहित्य आदि से टपकती बिन्दु मुक्ताएँ, ऋषि–मुनियों की साधना का प्रतिफल, महापुरुषों के पावन चिन्तन का अमृत कलश तथा साहित्य मनीषियों की कलम की जादूगरी। यदि संस्कृति संत को उर्वर भूमि देती है तो संत उसमें नवीन उद्भावनाओं के फल–पुष्प उत्पन्न करते हैं। याद रखिए, संत जन भौतिक सुखों की प्राप्ति या अपना प्रभुत्व स्थापित करने के लिए इस धरा पर नहीं आते अपितु पृथ्वी की दरिद्रता, अज्ञानता, विषमता आदि को बलात् अपनी और खींच लेती हैं। उनका कोमल हृदय दयार्द्र हो जाता है। आपने सुना ही होगा–''सन्त हृदय नवनीत समाना कहा कविन पर कहन न जाना। निज ताप द्रवे नवीनता, पर दुःख द्रवैं संत सुपुनीता।'' अर्थात् नवनीत (मक्खन) और संत में यही अन्तर है कि नवनीत तो अपने ही ताप (उष्णता) से पिघलता है परन्तु संतो का हृदय दूसरों के दुःखों से द्रवित होता है। संत की कोई कामना नहीं होती। वह तो मोक्ष की अभिलाषा भी नहीं करता। मोक्ष पाकर उसे मिलेगा भी क्या ? वह तो अपने अकेलेपन से बोर हो जायेगा। उसे तो समाज चाहिए, ऐसा समाज जो पीड़ित हो, दुःखी हो, जहाँ वह उनके संताप को दूर कर सके। अतः संत यही कामना करता है :–

''न त्वहं कामये राज्यं न सौख्यं न पुनर्भवम्।''
कामये दुःख तप्तानां प्राणिनां आर्ति नाशनम्।।''

अर्थात् न तो मुझे राज्य चाहिए और न मोक्ष। मैं तो दुःख संतप्त व्यक्तियों की पीड़ा को दूर करना चाहता हूँ।

किसी भी युग की कहानी हो, संत हृदय सब जगह मिल जाएगा। जब रामायण काल में राक्षस यज्ञों में विघ्न तथा ऋषियों को संतप्त करने लगे और सीता हरण के रूप में जब प्रकृति विलाप करने लगी तब मर्यादा पुरुषोत्तम रामचन्द्र जी ने सीता पति के रूप में सीता को बन्धन मुक्त किया। यह बन्धन मुक्ति ही संस्कृति की मुस्कान है। यदि महाभारत काल पर विचार किया जाय तो 'सूच्यग्रं न दास्यामि विना युद्धेन केशव' के रूप में जब दुर्योधन की राज्य लिप्सा बढ़ने लगी तथा द्रोपदी चीर हरण के रूप में जब मानवीय मूल्यों का ह्रास होने लगा, तब नीति पारंगत, संत स्वभाव का परिचय देते हुए योगिराज श्री कृष्ण ने निष्काम कर्म रूपी संस्कृति को जन्म दिया।

महाभारत काल के बाद भारतीय संस्कृति पर कठोर प्रहार हुए, अपनों से ही नहीं, परायों से भी। तथाकथित तत्काल ब्राह्मणों ने स्वार्थ पूर्ति के लिए वेदों के मनचाहे अर्थ लगाने शुरू कर दिए। वे 'वैदिकी हिंसा, हिंसा न भवति' कह कर यज्ञों में पशु बलि का समर्थन करने लगे, जिस कारण बौद्ध लोग वेद विरोधी हो गए। परिणामस्वरूप संस्कृति संत के रूप में शंकराचार्य ने वैदिक संस्कृति की पुनर्स्थापना की।

अब बात करते हैं, आधुनिक काल की। कई बार संस्कृति पर अपसंस्कृति की परतें चढ़ जाती हैं और लोग ढ़ोंग–पाखण्ड, अंधविश्वास और कुरीतियों को ही धर्म या संस्कृति का स्वरूप समझने लगते हैं। भारत में यही सब हुआ। पहले मुसलमानों और फिर अंग्रेजों के आधिपत्य के कारण देश का सांस्कृतिक गौरव मृतप्राय हो गया। जिस क्षेत्र में दृष्टिपात करते हैं, सर्वत्र निराशा थी। नारी घर की चार दीवारों में ही सिमट कर रह गई थी तथा उसे शिक्षा के अधिकार से वंचित कर दिया गया था। अपने ही कुछ देशवासियों के साथ अस्पृश्यता का व्यवहार किया जाने लगा। अपनी वैदिक संस्कृति को छोड़कर भारतवासी पाश्चात्य संस्कृति की और आकृष्ट होने लगे। स्वदेश और स्वभाषा की उपेक्षा होने लगी। ऐसी विषम परिस्थिति में जिस महान संस्कृति उपासक संत का आविर्भाव हुआ, उसका नाम था महर्षि दयानन्द सरस्वती।

महर्षि के अनथक प्रयास से फिर वैदिक संस्कृति का अभ्युदय हुआ। घर–परिवारों में वैदिक ऋचाएँ गूँजने लगीं। यज्ञादि धार्मिक अनुष्ठान होने लगे। ढ़ोंग–अन्धविश्वास, असमानता, अस्पृश्यता आदि की दीवारें ढ़हने लगीं। हिन्दी को आर्य भाषा मानकर उसका सम्मान किया गया। आर्य समाज ने अछ्तोद्धार, नारी शिक्षा प्रसार, वेद प्रचार आदि पर ध्यान केन्द्रित किया। ये सब महान कार्य तब हुए जब संत के रूप

में महर्षि दयानन्द ने समाज का मागदर्शन और नेतृत्व किया।

निस्संदेह संत हैं तो संस्कृति है। संस्कृति को संतों से शक्ति मिलती है। कई बार लम्बे समय बाद संस्कृति की बेल मुरझाने लगती है परन्तु अचानक किसी संत के पधारने से वह फिर से हरी–भरी हो जाती है। आधुनिक काल में महर्षि दयानन्द को सांस्कृतिक जागरण का पुरोधा कहा जा सकता है। क्या हमें अभी भी ऐसे संत की आवश्यकता नहीं है जिसे देख कर संस्कृति पुनः मुस्कुराने लगे ?

अपने शत्रु के कटु व्यवहार का बदला सद्भावनायुक्त व्यवहार से दें।

♦नीला सूद, सह सम्पादक, वैदिक थोट्स

किसी के अपकार का बदला अपकार से देना या आँख फोड़ने वाले की बदले में आँख फोड़ देना उचित हो सकता है परन्तु इसके हानिकारक प्रभाव भी हो सकते हैं। चाहे आप युद्ध जीत लें परन्तु दिल के एक कोने में आपको कुछ खालीपन का अनुभव होता है और लगता है कि आपकी कोई मूल्यवान वस्तु आपसे दूर हो गई है। महात्मा गांधी के शब्दों में, "आँख के बदले दूसरे की आँख को फोड़ने का परिणाम संसार को अन्धा कर सकता है।" समय बीतने के साथ किसी समय उपलब्धि दिखने वाली यह बात, निराशा व पछतावे में बदल जाती है। ऐसी परिस्थिति में, अपने प्रतिशोध को पूरा करने का दूसरा सुन्दर उपाय भी है और वह है कि हमारा बदला ऐसा हो कि दूसरे का हृदय परिवर्तन कर दे और आपसी वैमनस्य को खत्म कर आपसी सम्बंधों को सुधार दे। ऐसा करने से गलत काम करने वाले के मन में एक नया परिवर्तन होता है। अक्सर ऐसा करने पर विरोध मित्रता का रूप ले लेता है जो कि एक उल्लेखनीय उपलब्धि कही जा सकती है। ऐसा करने से हमारे मित्रों की संख्या में वृद्धि होती है और यह कहने की आवश्यकता नहीं कि जिसके जितने अधिक मित्र होते हैं वह उतना ही अधिक इस धरती पर स्वयं को सुखी व सन्तुष्ट अनुभव करता है।

जैसा हम जानते हैं बर्लिन की दीवार पूर्वी बर्लिन और पश्चिमी बर्लिन को बांटती थी। कुछ पूर्वी बर्लिन वासियों ने पश्चिमी बर्लिन वासियों के प्रति गहरा द्वेष भाव अपने अन्दर उत्पन्न कर लिया था। इसी द्वेष भाव के कारण पूर्व बर्लिन वालों ने पश्चिम बर्लिन वासियों का अपमान करने के लिए एक ट्रक में कूड़ा, ईंट के टुकड़े और अन्य अनाप–शनाप व्यर्थ की वस्तुएँ भरकर चोरी छिपे पश्चिमी बर्लिन वासियों को भेजीं। जब पश्चिम बर्लिन वालों को उसका पता लगा, तो वे इससे कुपित हुए और उन्होंने चाहा कि वह भी उसके बदले में वैसा ही व्यवहार करें। पश्चिम बर्लिन वासियों ने पूर्वी बर्लिन वासियों को एक ऐसा उपहार भेजने का निर्णय किया जिससे कि उनके किए गए अपमान का उचित बदला लिया जा सके। उनमें से एक बुद्धिमान व्यक्ति को जब पता लगा तो उसने उनको परामर्श दिया कि उनके भेजे सामान के बदले में उनको भोजन, कपड़े और चिकित्सा का सामान, दुर्लभ वस्तुएं एवं मूल्यवान पदार्थ भेजें। उन्होंने, उस सामान के साथ एक पत्र भी रखा, जिसमें कहा गया था कि हर कोई सामर्थ्य और बुद्धि के अनुसार देता है। यह कहने की आवश्यकता नहीं कि पश्चिमी बर्लिन के इस उदारपूर्ण कार्य से दोनों पक्षों में विश्वास का भाव एवं अच्छे सम्बन्ध पैदा हुए।

बुद्धिमान मनुष्य महान् गुणों को जीवन में धारण करते हैं व उनका पालन करते हैं। एक जुनूनी धार्मिक अन्धविश्वासी व्यक्ति समाज सुधारक सन्त स्वामी दयानन्द सरस्वती के अन्धविश्वासों व कुरीतियों के खण्डन एवं सत्य मान्यताओं में मण्डन से चिढ़कर प्रायः हर समय चिल्लाकर–चिल्लाकर उनके लिए अपशब्दों व गालियों का प्रयोग करता था। एक दिन स्वामी जी का एक अनुयायी उनके लिए फलों की एक टोकरी ले कर आया। स्वामी जी ने तुरन्त अपने एक अन्य भक्त को पास बुलाया और उसे टोकरी में से कुछ फल ले जाकर उस गेरुए वेशभूषा वाले व्यक्ति को देने को कहा जो प्रतिदिन उन्हें गालियाँ दिया करता था। उन्होंने उसे यह संदेश भी भेजा कि उसे इन फलों की अधिक आवश्यकता है क्योंकि स्वामी जी के प्रति अपनी भावनाओं को अभिव्यक्त करने के लिए उसे गालियाँ देने में अपनी भारी ऊर्जा खर्च करनी पड़ती है। स्वामी जी का भक्त स्वामी जी की यह बात सुनकर हतप्रभ रह गया पर स्वामी जी की इच्छानुसार उसने उस व्यक्ति के पास जाकर उसको फल देकर स्वामी जी का संदेश भी दे दिया। वह व्यक्ति स्वामी जी के उस व्यवहार से चकित रह गया और स्वयं को लज्जित अनुभव करते हुए उनके पास क्षमा माँगने जा पहुँचा। उसका हृदय परिवर्तन हो गया और वह उनका अनुगामी भक्त बन गया। इस घटना से यह सिद्ध होता है कि उदारता व दान आदि गुणों को धारण करने से शत्रु को मित्र में बदला जा सकता है। यह प्रतिशोध के पवित्र तरीके को अपनाने से मिलने वाली शक्ति है।

प्रतिशोध की भावना से अन्धे होकर आँख के बदले आँख लेने की जगह इस प्रकार के प्रेम युक्त मधुर व्यवहार को अपनाकर आज के युग में शत्रुता के रवैये को मित्रता में बदला जा सकता है खास कर जबकि आज द्वेष भावना व इससे उत्पन्न हिंसा ने सबमें परस्पर डर पैदा किया हुआ है। यह स्थिति मानवता के लिए शर्मनाक है।

विदेशों में वेद प्रचार

♦ज्ञानेश्वर आर्य, ओमान, दुबई

आर्य सज्जनों के आमंत्रण पर २३ मार्च को दुबई पहुँचा। यहाँ दर्शन अध्यापन, ध्यान, शंका समाधान तथा प्रेरणा देता हूँ। अवसर प्राप्त करके अन्य देशों में भ्रमणार्थ भी चला जाता हूँ। यह मेरी २१ वीं प्रचार यात्रा है खाड़ी में तीसरी वार आया हूँ।

विदेशों में सार्वजनिक रूप से प्रतिदिन यज्ञ, सत्संग, प्रवचन के कार्यक्रम नहीं होते हैं। शनि या रवि विशेष उत्सव में ही बड़े कार्यक्रम होते हैं। श्रोता ५० से २००–२५० तक भी हो जाते हैं पारिवारिक सत्संग में १०–२०–३०–५० तक ही रहते हैं। भाषा का माध्यम हिन्दी ही मुख्य रूप से होता है गौण रूप से अंग्रेज़ी का भी प्रयोग करता हूँ। प्रवचनों में अधिकांश भारतीय ही होते हैं कभी विशेष कार्यक्रमों में विदेशी लोग भी भाग लेते हैं। जब समाज या परिवारों में व्यवस्था हो जाती है तो भोजन वहाँ पर अन्यथा होटल या स्वयंपाकी बनकर भोजन करता हूँ।

विगत १५ वर्षों से अनेकों देशों में प्रचार यात्रा करते हुए यह पाया कि किसी देश में समाज हो या नहीं जहाँ आर्य हैं वहाँ विद्वान् प्रचारकों की आवश्यकता है, अमेरिका हो या युरोप–अफ्रीका हो या पूर्व के देश। दर्जनों समाजों वा नगरों में सैंकड़ों की संख्या में आर्य (वैदिक धर्मी) विचारधारा वाले लोग रहते हैं, चाहे वे धन्धा करें या नौकरी उनको प्रेरित करके एक स्थान पर सप्ताह में एकत्रित किया जाये तो थोड़े से ही काल में समाज की स्थापना हो सकती है उसके माध्यम से अनेक प्रकार के धार्मिक कार्यक्रम बनाकर वैदिक धर्म का प्रचार प्रसार किया जा सकता है।

विद्वानों की माँग भी बहुत है और उपलब्धि भी बहुत है, बस कमी है तो इस बात की कि कोई माध्यम हो जो इस कार्य को सम्पन्न कर सके। भारत में अनुभवी, प्रौढ़, प्रचारकों की एक संस्था बनाकर जिसमें देश तथा विदेश दोनों के अधिकारी महानुभाव हों, प्रचारकों का चयन, नीति निर्धारण, दक्षिणा, मार्ग व्यय, साधन–सुविधा, अवकाश, प्रचार के विषय, समय निश्चय, भोजन, आवास वाहन, संदेश संचार आदि महत्त्वपूर्ण विषयों से सम्बन्धित लिखित विवरण बनाये। यदि आवश्यकता हो तो विद्वानों का कुछ काल के लिए शिविर (मागदर्शन) भी लगाया जा सकता है उनमें से योग्य प्रचारकों का चयन करके उनसे लिखितरूप में अनुबन्ध कराकर प्रचारार्थ विदेश भेजा जाये।

♦उचित तो यही है कि अधिकारी केन्द्रिय सत्ता के अन्तर्गत ऐसी संस्था बने, यदि ऐसा किन्हीं कारणों से संभव न हो तो व्यक्तिगत रूप से विदेशी समाजों के अधिकारी महानुभावों का विश्वास सहयोग निर्देश प्राप्त करके भी ऐसी संस्था बनायी जा सकती है विदेश प्रचारार्थ जाने वाले विद्वानों को विदेश में किन–किन बातों का विशेष ध्यान रखना आवश्यक है वे बातें अवश्य ही बता देनी चाहिए जिससे भविष्य में कोई अनिष्ट, अभद्र, अशिष्ट घटना न घटे। अनुबन्ध से विद्वानों को यह प्रतीत न हो कि उनको बन्धक बनाया जा रहा है और ऐसी इतनी स्वतन्त्रता भी न दी जाये कि वे स्वेच्छाचारी बन जायें।

♦ऐसी माध्यम बनने वाली संस्था न होने पर योग्य विद्वान् स्वयं भी विदेश प्रचारार्थ जाने का साहस कर सकते हैं। विदेश में रहने वाले सामाजिक अधिकारियों के मन में प्रायः ऐसी आशंकाएं बनी होती है कि कैसा स्वभाव है, कैसा बोलते है, क्या सुविधाएं चाहिए और क्या अपेक्षाएं है ? आदि आदि। विदेश जाने वाले विद्वानों को चाहिए कि वे दान–दक्षिणा, साधन–सुविधा यात्रा व्यय वाहन भ्रमण आदि की याचना न करें, न प्रसंग बनाकर चर्चा करे।

अपने व्यवहारों को स्पष्ट, सरल, विनम्र गम्भीर बनकर करें। प्रवचन में विवादास्पद, अप्रासंगिक, अनुपयुक्त, अनावश्यक विषयों को न उठावें। कभी कहीं किसी विषय में अवैदिकता, अप्रामाणिकता प्रतीत हो तो तत्काल खण्डन, विरोध, परिवर्धन, परिवर्तन न करें। कर्मकाण्ड में कुछ लचीलापन बना ले। पश्चात् अवसर मिलने पर लोगों को समझा कर सुधार किया जा सकता है।

♦अपने विषय में, विदेश स्थित अधिकारियों को विश्वास दिलाने हेतु भारत के प्रतिष्ठित विद्वानों अधिकारियों की संस्तुति भी प्राप्त की जा सकती है यदि यात्रा व्यय प्रारम्भ में स्वयं ही (किसी से सहयोग प्राप्त करके) वहन किया जाये तो अति लाभकारी होगा। एक बार विदेश जाने पर प्रवचन, व्यवहार, विद्वता, त्याग, तपस्या, निष्कामता का प्रभाव पड़ेगा तो स्वतः लोग हर प्रकार का सहयोग करेंगे सुविधाएं प्रदान करेंगे बुलायेंगे।

♦हे प्रभो ! देश और विदेश में स्थित वैदिक धर्म के कर्णधारों अधिकारियों, विद्वानों के हृदयों में ऐसी प्रेरणा, उत्साह आशा के भाव भरो कि वे संगठित होकर, नीति निर्धारण करके, विद्वानों का निर्माण, विदेश में प्रेषण करके, सहजता से वैदिक धर्म के शाश्वत सिद्धांतों का प्रचार–प्रसार विश्व भर में करा दें और आर्यों का अखण्डित चक्रवर्ती साम्राज्य पुनः स्थापित हो जाये इसी हार्दिक कामना आशा विश्वास के साथ।

सीख

♦आचार्य सोमदेव

महाभारत के वन पर्व में प्रसिद्ध यक्ष–युधिष्ठिर संवाद है, जिसमें यक्ष धर्मराज युधिष्ठिर से प्रश्न पूछता है और युधिष्ठिर स्थिर बुद्धि से इसका उत्तर देते हैं। जो इस प्रकार हैं :–

यक्ष–हे युधिष्ठिर ! किसको मारकर व्यक्ति सबका प्रिय बन सकता है ?

युधिष्ठिर–अहंकार को मारकर व्यक्ति सबका प्रिय बन सकता है।

यक्ष–किसको मारकर व्यक्ति शोक नहीं करता है ?

युधिष्ठिर–क्रोध को मारकर व्यक्ति शोक नहीं करता है।

यक्ष–किसको मारकर व्यक्ति धनी हो सकता है ?

युधिष्ठिर–काम को मारकर व्यक्ति धनी हो सकता है।

यक्ष–किसको मारकर व्यक्ति सुखी हो सकता है ?

युधिष्ठिर–लोभ को मारकर व्यक्ति सुखी हो सकता है।

पुनः इन प्रश्नोत्तरों की विस्तृत व्याख्या करते हुए आपने बताया कि वस्तुतः 'अहंकार' को मारकर ही व्यक्ति सबका प्रिय हो सकता है। संसार में व्यक्तियों को भिन्न–भिन्न प्रकार का अहंकार होता है–जैसे सम्पत्ति का अभिमान, पद का, विद्या का, कुल का, धार्मिकता का, दानशीलता का अभिमान आदि–आदि। व्यक्ति जब तक अपने व्यक्तित्व को अभिमान से सीमित रखता है तो उसमें व अन्यों में संघर्ष चलता रहता है, लेकिन जब वह अभिमान का त्याग कर देता है तो वह सबका हो जाता है। महाकवि माघ का उदाहरण देते हुए आपने बताया कि महाकवि माघ थे तो संस्कृति के उच्च श्रेणी के कवि लेकिन इन्हें अपनी विद्या का अभिमान था। एक बार महाकवि जब अपने आश्रयदाता राजा के साथ जंगल में घूम रहे थे तो रास्ता भटक गए, काफी दूर चलने पर एक कुटिया दिखाई दी, समीप जाकर देखा तो वहाँ एक बूढ़ी माता झाड़ू लगा रही थी। अपने अभिमान में माघ ने पूछा–हे बूढ़िया ! ये रास्ता कहाँ जाता है ? बूढ़ी माता ने उनको अच्छी तरह से देखा फिर बोलो–मूर्ख ! रास्ता कहीं नहीं जाता। रास्ते पर तो राहगीर जाते हैं। बूढ़ी माता के इस अप्रत्याक्षित उत्तर को सुनकर मा[illegible] तिलमिला गए। लेकिन जंगल में भटकते हुए [illegible]हुत देर हो चुकी थी, अतः फिर पूछा–अच्छा हम राहगीर हैं, अब बता दो कि ये रास्ता कहाँ जाता है ? बूढ़ी बोली–राहगीर तो दो होते हैं–सूर्य और चन्द्रमा, तुम इनमें से कौन हो ? माघ को इस उत्तर की कल्पना नहीं थी ? माघ के साथ में राजा है जिनके सामने बड़े–बड़े कवि आपकी विद्वत्ता का लोहा मान चुके थे और यहाँ क्या, यहाँ एक बूढ़ी माता महाकवि माघ के वाक्यों में ही प्रश्न चिन्ह लगा रही थी। माघ जंगल में और भटकना नहीं चाहते थे, उन्होंने धैर्य रखकर पूछा–अच्छा भाई! हम राजा के आदमी हैं, अब बता दो ये रास्ता कहाँ जाता है। बूढ़ी बोली–राजा तो दो होते हैं–इन्द्र और यम। तुम किस राजा के आदमी हो ? माघ बोले–हम क्षमा करने वाला हैं। बूढ़ी बोली–क्षमा तो पृथ्वी ओर नारी ही करती है, तुम इनमें से कौन हो ?माघ बोले–हम क्षणभंगुर हैं। बूढ़ी बोली–क्षणभंगुर तो दो होते हैं–सम्पत्ति और युवावस्था, तुम इनमें से कौन हो ?बूढ़ी माता के उत्तर से निरूत्तर होते माघ समझ ही नहीं पा रहे थे कि क्या उत्तर दिया जाए अन्त में बोले–हम हारने वाले हैं। बूढ़ी बोली–हारते तो ही तरह के व्यक्ति हैं एक वो जिसका चरित्र चला जाता है या वो जो किसी का ऋणी हो जाता है, तुम्हारा क्या गया क्या चरित्र गया या तुम किसी के ऋणी हो ? माघ बूढ़ी माता के चरणों में गिर गए, बोले–माई तू कौन है ? बूढ़ी माता बोली–महाकवि माघ! उठो। माघ को इस प्रका अपना नाम सुनकर आश्चर्य हुआ, उन्होंने पूछा–माई तुम हमें जानती हो। बूढ़ी बोली–हाँ महाकवि मैं तुम्हें देखते ही पहचान गई थी और मैं तुम्हारे अहंकार के बारे में भी जानती हूँ। माघ अभी तुम कुछ लोगों के ही प्रिय हो, लेकिन जब तुम अपना अभिमान छोड़ दोगे तो सबके प्रिय हो जाओगे।

Arya Vandana/Sml/L33/Sm/64/2000 Postal Registered No. : MANDI (HP)/21/2013-15
Valid upto 31-12-2015

बुक पोस्ट

सेवा में

, मन्त्री आर्य प्रति
ान रोड, नई दिल्ली

आर्य समाज कुल्लू के पदाधिकारियों के चित्र

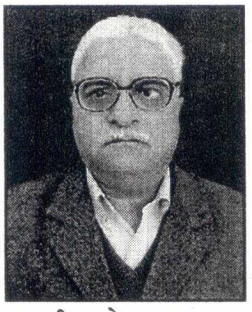

श्री अशोक आनन्द
प्रधान

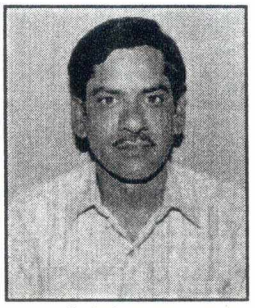

श्री गिरिजा नन्द
मन्त्री

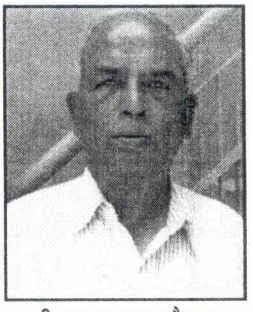

श्री मनसा राम चौहान
कोषाध्यक्ष

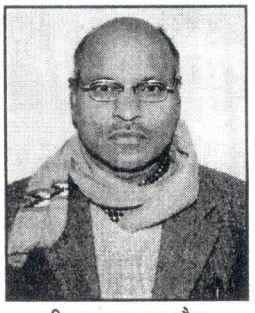

श्री राज कुमार जैन
उपप्रधान

एक चीज

जीतने के लिए कोई चीज है तो : प्रेम
पीने के लिए कोई चीज है तो : क्रोध
खोने के लिए कोई चीज है तो : गम
देने के लिए कोई चीज है तो : दान
दिखाने के लिए कोई चीज है तो : दया
लेने के लिए कोई चीज है तो : ज्ञान
कहने के लिए कोई चीज है तो : सत्य
रखने के लिए कोई चीज है तो : इज्जत
फैंकने के लिए कोई चीज है तो : ईर्ष्या
छोड़ने के लिए कोई चीज है तो : मोह

धन से

धन से पुस्तक मिलती है, किन्तु ज्ञान नहीं।
धन से आभूषण मिलता है, किन्तु रूप नहीं।
धन से सुख मिलता है, किन्तु आनन्द नहीं।
धन से साथी मिलते है, किन्तु सच्चे मित्र नहीं।
धन से भोजन मिलता है, किन्तु भूख नहीं।
धन से दवा मिलती है, किन्तु स्वास्थ्य नहीं।
धन से एकांत मिलता है, किन्तु शांति नहीं।
धन से बिस्तर मिलते है, किन्तु नींद नहीं।

—रमा शर्मा, खरीहड़ी

श्री सी. पी. महाजन

साभार

श्री सी. पी. महाजन, प्रधान, आर्य समाज नूरपुर ने ₹ ५०० की सहयोग राशि भेंट की। आर्य वन्दना परिवार इनका धन्यवाद व्यक्त करता है।

आर्य वन्दना शुल्क : वार्षिक शुल्क : ₹100, द्विवार्षिक शुल्क : ₹ 160, त्रैवार्षिक शुल्क : ₹ 200
आप शुल्क हि. प्र. स्टेट को-आपरेटिव बैंक लिमिटेड, सुन्दरनगर शाखा (खाता संख्या : 32510115356 आर्य वन्दना) में भी जमा करवा सकते हैं।